—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० **93**
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : **0522-2740406**
फैक्स : **0522-2741231**
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि	
एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computars - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2008 वर्ष 7 अंक 03

उम्मत के नवजवानो !

न झिझको ज़रा भी न घबराओ तुम
भरोसा करो रब पे उठजाओ तुम
मदद रब की होगी यक़ीं तुम करो
वो रब है तुम्हारा दम उस का भरो

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ पारस्परिक एकता	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फर नदवी	9
❐ हिन्दोस्तान के कुछ ऐतिहासिक यथार्थ	अनुवाद - हबीबुल्लाह आजमी	11
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	12
❐ हम कैसे पढ़ाएं	डा० सलामतुल्लाह	14
❐ घूस	अल्लामा सै० सुलैमान नदवी	16
❐ कादियानियत संक्षेप में	एन साकिब अब्बासी	17
❐ अंगूर	इदारा	19
❐ नबी के उम्मतीयो	इदारा	19
❐ ग्लोबल वार्मिंग	विद्या प्रकाश	20
❐ इस्लाम फ्रांस का बड़ा मजहब	मु० शफीअ	21
❐ इन्सानी ब्रादरी का हक	सै० सुलेमान नदवी	22
❐ मिल्लत का एफा	इदारा	24
❐ उम्मते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	स० अब्दुल कादिर जीलानी (रह०)	25
❐ डेनमार्क में मुसलमानों की बढ़ती संख्या	अकीदतुल्लाह कासिमी	26
❐ तुलसी	इदारा	27
❐ उपभोक्ताओं की समस्याएं	युगेश कुमार गोयल	28
❐ स्त्रियों की संख्या अधिक	इदारा	29
❐ औलाद की तर्बीयत	इदारा	29
❐ जनता की सुरक्षा के लिये रात्रि-गश्त	मौ० इमामुद्दीन	30
❐ हिन्दी लिपि में उर्दू शब्द	इदारा	32
❐ क्या आप जानते हैं?	मारिया अली	33
❐ इस्लाम में जोर जबरदस्ती नहीं	माखूज	34
❐ पाश्चात्य समाज	सलमान नसीम नदवी	35
❐ कारवाने जिन्दगी	स०अ० हसन अली हसनी नदवी	37
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

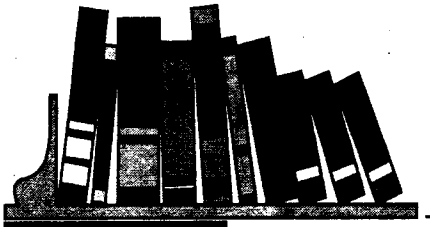

पारस्परिक एकता

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

आज इस जगत में इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो अपने मानने वालों में अपने सृष्टा तथा स्वामी का विश्वास सुदृढ़ करता और उस की पकड़ के भय से अन्धेरे, उजाले, खुले छुपे बुरे कामों से रोके रखता है तथा पारलौकिक शाश्वत जीवन बनाने में सांसारिक लोभ लालच से दूर रखता है, यौनिक स्वतंत्रता, उदर पालन, तथा भौतिक वाद से घृणी बनाता है। इस्लाम धर्म की यह श्रेष्ठता और उस की यह वास्तविक प्रधानता पश्चिमी सत्ताओं विशेषकर अमरीका को अप्रिय है, इसलिये कि इस्लाम उसके भौतिकवाद तथा पशुता से भी आगे यौनिक पथ भ्रष्टता फैलाने में रोड़ा बना हुआ है। अतः अमरीका और उस के सहयोगियों ने मुसलमानों को मिटा देने अथवा कम से कम उन को बदल देने के लिये षड़यंत्रों तथा छलों का जाल बिछा दिया है।

यह असत्य है कि मुसलमान अशिक्षित है इस कारण वह औरों की अपेक्षा उन्नति में पीछे है, वास्तव में उन की उन्नति पर पहरे हैं, उच्चतर शिक्षा प्राप्त इन्जीनियर डाक्टर, गवेषक वही उच्च पद पाते हैं जिन्हें पश्चिम ने कन्वर्ट कर लिया है, बहुधा ऐसा ही देखा गया है। परन्तु जो मुसलमान अपने धर्म से जुड़कर किसी कला में कुशलता प्राप्त करते हैं उन्हें आतंकवादी बनाकर कारागार दिखा दिया जाता है और उसका कैरियर दाग़दार बनाकर उस की उन्नति पर मुहर लगा दी जाती है, जो इस से बचते हैं उन्हें प्रतियोगिता के साक्षात्कार (इन्टरविव) में विफल कर दिया जाता है। इसी प्रकार विद्या तथा कला में कुशल, उन ही मुस्लिम स्त्रियों को उच्च पद मिलता है जो सहशिक्षा में भोगविलास से आनन्दित हो चुकी होती हैं तथा अपरिचितों को अपना भेदी बना चुकी होती हैं और इस्लामी आदर्शो को विदा कर चुकी होती हैं, परन्तु जो नारियां इस्लाम से जुड़कर देश सेवा करना चाहें समाज में उनका कोई स्थान नहीं उनको तो स्कार्फ पहनकर क्लास में बैठने से भी रोका जा सकता है अतः सिद्ध हुआ कि मुसलमान के उन्नति न करने का कारण अशिक्षित होना नहीं मुसलमान होना है परन्तु "मकरू व मकरल्लाह", उन्होंने षड़यंत्र रचा अल्लाह ने भी उनकी चाल को असफल करने का निर्णय लिया, निराश होने की आवश्कता नहीं यदि तुम ईमान वाले हो तो तुम ही ऊँचे रहोगे इस संसार में भी और परलोक में भी और यदि इस क्षणिक जीवन में कष्ट ही रहा तो भी परलोक की सफलता तुम्हारे लिये विश्वसनीय है उस में कोई सन्देह नहीं बस ईमान आवश्यक है।

परन्तु शत्रु की ओर से इस छल तथा षड़यंत्र से लड़ने के लिये पारस्परिक एकता अति आवश्यक है आज हमारे बीच शीआ, सुन्नी देवबन्दी, बरेलवी, मुकल्लिद, गैर मुकल्लिद का भेद भाव इतना बढ़ गया है कि हम परस्पर बंट कर रह गये है हमारी हवा उखड़ी हुई है, इसी कारण इस्लाम और मुसलमानों का शत्रु हमे जहां चाहता है नीचा दिखा देता है।

यदि हम एक हो जाएं तो हमारी एकता से शत्रु भयभीत होगा और हम को हानि पहुचाना उस के लिये कठिन होगा।

यह सत्य है कि हमारे इन मतभेदों के कुछ ऐसे कारण है जो एकता में बाधक हैं परन्तु कुछ

मौलिक तत्व ऐसे भी हैं जो सब में पाए जाते हैं उन के आधार पर एकता सम्भव है जैसे यदि हम सब का ख़ुदा (परमेश्वर) एक है, उसका रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हम सब को मान्य है। उसकी पुस्तक पवित्र कुर्आन हम सब को मान्य है। अतः यदि हमारे शीआ़ भाई सूर–ए–हश्र की यह आयत देखते "रब्बनग़्फ़िरलना व लिइख़्वानिनल्लज़ीन सबक़ूना बिलईमानि वला तज्अ़ल फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्ललिल्लज़ीन आमनू रब्बना इन्नक रऊफ़ुर्रहीम" और सरतुलफ़त्हि की आयत १८ में पढ़ते "लकद रज़ियल्लाहु अनिल मुअमिनीन इज़ युबायिअूनक तहतश्शजरति" हम जान बूझकर अनुवाद नही लिख रहे है कि यह मांग हम ने विद्वानों से की है। यदि इस विवाद में हम न पड़ना चाहें तो इमामों के पितामह हजरत अ़ली और उनके बेटों की नीति ही अपना लें कि चोटी के तीन इमामों, हज़रत अ़ली, ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाह अ़न्हुम ह़ज़रत अबूबक्र ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत उ़समान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से राज़ी व ख़ुश रहे, उनके पीछे नमाज़ें अदा करते रहे, उनके आदेशों का पालन करते रहे, उन का सहयोग करते रहे, यदि हमारे शीआ़ भाई उन तीनों इमामों की भांति उन को बुरा न कहें उनको ख़लीफ़ा मानने वालों से लड़ाई न रखें तो शीआ़ सुन्नी एकता में रूकावट नहीं हो सकती, रहे दूसरे कर्म तो लोग अपने अपने तौर पर करें एक दूसरे को उनके करने पर ना ही बाध्य करे न बाधा डाले, तो एकता की दीवार में दराड़ नहीं पड़ सकती, वैसे सुन्नी मुसलमान जहां ख़ुलफ़ाए राशिदीन समेत सारे सह़ाबा का आदर सम्मान करते हैं वहीं आदरणीय, ह़सन, ह़ुसैन रज़ियाल्लाह अ़न्हुमा तथा आदरणीय जन ज़ैनुल आ़बिदीन, मुह़म्मद बाक़िर, जाफ़र सादिक़, मूसा काज़िम, इमाम रज़ा, मुह़म्मद तक़ी, अ़लीनक़ी, ह़सन अ़स्करी रह़िमहुमुल्लाहु का भी पूर्ण सम्मान करते है। जिनको शीआ़ लोग अपना इमाम मानते हैं, उनके जीवन में सुन्नी जन उनसे निरंतर संबंधित रहे, उनसे पथ प्रदर्शन लिया सुन्नी पुस्तकों में उनकी जीवनियां अंकित हैं। कभी किसी सुन्नी से उनके विरोध में कोई शब्द नहीं सुना गया। रहे महदीये आख़िरूज़्ज़मां तो उनकी प्रतीक्षा तो शीओं से अधिक सुन्नी कर रहे हैं।

इसी प्रकार देव बन्दी और बरेलवली यदि इस पर सहमत हो जाएं कि एक दूसरे पर आपत्तियां न करें अपनी अपनी खोज पर आबद्ध रहें, एक दूसरे को सहन करें, अल्लाह एक, रसूल (स०) एक, कुर्आन एक, ह़दीस एक, फ़िक़्ह की पुस्तकें समान फिर झगड़ा कैसा?

झगड़ा केवल अनावश्यक खोजों में पड़ने एक दूसरे के विषय में बुरे अनुमान करने और आरोप लगाने के कारण है। यदि ह़ज़रत जिब्रील वाली ह़दीस के अनुसार ईमान तथा कर्म को पर्याप्त समझा जाए तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की शिक्षा के अनुकूल इस्लाम, ईमान, एह़सान तीनों प्राप्त हो जाएंगे जो मोक्ष प्राप्त के लिये पर्याप्त है। इस प्रकार देवबन्दी तथा बरेलवी मुसलमानों के मेल का एक मार्ग मिल सकता है।

ऐसे ही मुक़ल्लिद (किसी इमाम के अनुगामी) यदि ग़ैर मुक़ल्लिद (किसी इमाम का अनुसरण न करने वाले) को यह सोच कर बुरा न समझें कि वह न सही किसी इमाम का अनुसरण, परन्तु अपनी समझ से सही हमारे मह़बूब व आक़ा, नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की ह़दीसों को मानते और उनके अनुकूल जीवन बिताते हैं अतः हमारे भाई हैं। इसी प्रकार ग़ैर मुक़ल्लिद जनों को चाहिये कि वह मुक़ल्लिदों को मुशरिक न कह बैठें अपितु इस प्रकार सोचें कि यह ह़नफ़ी, मालिकी शाफ़ओ़ी ह़ंबली आदि किताब व सुन्नत को छोड़ कर अपने इमामों के अनुगामी नहीं हैं अपितु उन्होंने किताब व सुन्नत को समझने तथा किताब व सुन्नत के अनुसार जीवन बिताने की विधियों के ज्ञान के लिये अपने इमामों को अपना गुरू माना है।

मैं समझता हूँ मेरी यह पुकार जंगल नादि से अधिक कुछ भी सिद्ध न होगी फिर भी जब मेरे हृदय में टीस उठी तो मैं चिल्ला पड़ा। हो सकता उम्मत के विद्वान उठें और पारस्परिक एकता का कोई मार्ग प्रस्तुत कर दें वैसे कोई एक व्यक्ति भी मुझ से सहमत होकर पारस्परिक एकता की ओर अपने पग बढ़ा देगा तो मैं समझूंगा कि मेरी यह हार्दिक नादि सफल हुई।

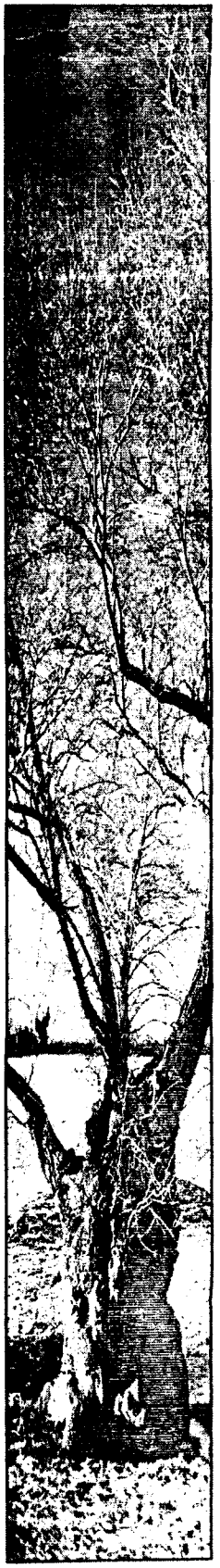

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

तक़्वा

तर्जमाः– और डरो अल्लाह से और यक़ीन मानो कि (मुजरिमों को) अल्लाह बड़ी सख़्त सज़ा देने वाला है। (बक़रहः १६६)

इसी तरह सूरए–मॉइदह के पहले ही रूकूअ् में फ़र्माया गया है :–

तर्जमाः–और डरो अल्लाह से। यक़ीनन अल्लाह (मुजरिमों को) सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है (माइदह : २) और चन्द आयतों के बाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमाः– और डरो अल्लाह से। बेशक अल्लाह सीनों के छुपे हुये राज़ भी जानता है। (माइदह : ७) और इस से अगली ही आयत में फिर फ़र्माया गया है :–

तर्जमाः– और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह तुम्हारे तमाम अह्वाल से आगाह है। (माइदह : ८) चंद जगहों पर तक़्वा की तालीम व तलक़ीन के लिये यह उ़न्वान भी इख़्तियार फ़र्माया गया है कि :– "अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो, तुम को उस के दरबार में हाज़िर होना है!" – मसलन सूरए – बक़रह में इर्शाद है :–

तर्जमाः– और डरो अल्लाह से और यक़ीन जानो कि तुम सब उस के सामने जमा किये जाओगे। (बक़रह : २०३)

फिर दो रूकुअ् के बाद इसी सूरः बक़रह में फ़र्माया गया है :–

तर्जमाः– और अल्लाह से डरो और यक़ीन जानो कि तुम सब उस के सामने हाज़िर होने वाले हो। (बक़रह : २२३)

इन सब आयतों में तो तरहीबी (डराने वाले) अन्दाज़ में तक़्वा की तालीम और तलक़ीन फ़र्मायी गयी है। अब चन्द आयतें वे भी पढ़ लीजिये जिन में तरग़ीबी (रग़बत दिलाने वाले) अन्दाज़ में यानी मग़फ़िरत व रह़मत व जन्नत व रिज़ाए – इलाही की ख़ुश ख़बरियां सुना सुना कर तक़्वा पर उभारा गया है – सूरए – निसॉअ में एक मौक़े पर इर्शाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमाः– और अगर तुम इस्लाह (सुधार) और तक़्वा का रवैय्या इख़्तियार करो तो अल्लाह बहुत बख़्शने वाला और बहुत ही मेहरबान है (वह तुम्होर साथ मग़फ़िरत और रह़मत ही से पेश आयेगा) (अन्निसा : १२६)

और सूरए – हुजुरात में फ़र्माया :–

तर्जमाः– अल्लाह से डरो और तक़्वा इख़्तियार करो। अल्लाह बहुत इनायत फ़र्माने वाला और बहुत मेहरबान है। (अलहुजुरात : १२)

तर्जमाः– अल्लाह से डरो और तक़्वा की रविश इख़्तियार करो, ताकि तुम पर तुम्हारे मालिक की रह़मत हो। (अल हुजुरात :१०)

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा वालों के लिये 'मग़फ़िरत' और 'रह़मत' के अ़लावा अपनी 'मुह़ब्बत' और प्यार का भी वादा फ़र्माया है। सूरए – आलि अ़िम्रान में इर्शाद है :–

तर्जमा :– हाँ जो पूरा करें अ़हद (वादा) और तक़्वा का रवैया इख़्तियार करें तो अल्लाह उन मुत्तक़ी बन्दों से मुह़ब्बत और प्यार करता है। (आलिइ़म्रान : ७६)

इसी तरह सूरए – तौबा में इर्शाद है :–

तर्जमाः– बेशक अल्लाह का प्यार है अपने मुत्तक़ी बन्दों पर (तौबा : ४)

इन आयतों में अहले–तक़्वा के साथ अल्लाह तआ़ला की जिस मुह़ब्बत और रह़मत की ख़बर दी गयी है उस का अस्ल ज़ुहूर (प्रकटन) तो आ़लमे – आ़खिरत ही में होगा जो अस्ल में जज़ा का आ़लम है। लेकिन क़ुरआने–मजीद ही ने बतलाया है कि किसी दर्जे (मात्रा) में उस का ज़ुहूर इस दुनया में भी होता है। इस मज़मून की चन्द आयते पिछले अको में आप पढ़ चके हैं। एक आयत यहाँ और पढ़ लीजाये। सूरए – आलि अ़िम्रान में इर्शाद है :–

तर्जमाः– और अगर तुम सब्र व मज़बूती और तक्वे के साथ रहो तो तुम्हारे उन दुश्मनों की चालों (और उन के छुपे वारों) से तुम को कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा (क्योंकि फिर अल्लाह तुम्हारा मुह़ाफ़िज और मददगार होगा) और वे दुश्मन जो कुछ करते हैं (और तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिये जो छुपी चालें (छल – युक्ति) चलते हैं अल्लाह तआला उस सब को जानता है और सब उस

के बस में है। (आलि इम्रान : १२१)

गोया अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वादा और बशारत है कि अल्लाह के जो बन्दे सब्र और तक़्वा की रविश इख़्तियार करेंगे, उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में अल्लाह तआ़ला उन की हिमायत और मदद करेगा। और उन के खल–छल से उनकी हिफ़ाज़त फ़र्मायेगा।

अहले – तक़्वा को एक ख़ुशख़बरी, क़ुरआने – मजीद यह भी सुनाता है कि मौत के वक़्त उन की रूह (आत्मा) ख़ुश व ख़ुर्रम होती है और क़ब्जे – रूह (रूह् निकालने) के लिये जो फ़रिश्ते उन के पास आते हैं वे उनको पहले सलाम करके जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं।

सूरए – नह्ल में अहले – तक़्वा को आख़िरत में जन्नत और उस की नेमतों और लज़्ज़तों की ख़ुश ख़बरी सुनाने के बाद फ़र्माया गया है:–
तर्जमा :– अल्लाह तआ़ला ऐसी ही जज़ा देगा मुत्तक़ियों को। वे मुततक़ी बन्दे जिन की रूह क़ब्ज करते हैं फ़रिश्ते, ख़ुशी की हालत में, कहते हैं उन से , तुमहारे लिये तुम्हारे रब की तरफ़् से सलामती है (और उस का तुम्हारे लिये फ़र्मान और फ़ैसला है कि) पहुंच जाओ उस की तैयार की हुयी जन्नत में अपने आमाल के सबब से। (नह्लः ३१, ३२)

इसी तरह क़ुरआने – मजीद ही का बयान है कि इसी तरह आख़िरत में जन्नत में प्रवेश के वक़्त भी वे फ़रिश्ते जो जन्नत के निगराँ हैं, अहले – तक़वा का स्वागत बड़े सम्मान से करेंगे और उन को सलाम करके और मुबारक बाद दे के अल्लाह तआ़ला के इनामों की बशारतों से उन को ख़ुश करेंगे। पढ़िये सूरए – ज़ुमर के आख़री रूकूअ़ की यह आयत :–
तर्जमाः– और ले जाये जायेंगे, मुत्तक़ी बन्दे जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह यहां तक कि जब वे जन्नत के पास पहुंचेगे और उस के दरवाज़े खोले जायेगे और उस के दरोगा (निगराँ–रक्षक) उन से कहेंगे सलाम हो तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा (पवित्र) हो। पस दाख़िल हो जाओ उस में हमेशा के लिये।

(ज़ुमर : ७३)

फ़रिश्तों की तरफ़ से यह सलामी और मुबारक बाद (बधाइयां) लेते हुय अल्लाह के ये मुत्तक़ी बन्दे उस जन्नत में दाख़िल होंगे जो अल्लाह ने उन्हीं के लिये सजाई और बनाई है। और उस वक़्त उन की ज़बानों पर अपने मालिक की हम्द और उस के शुक्र का यह तराना होगा –
तर्जमा :– तमाम तारीफ़ है उस ख़ुदा के लिये जिस ने पूरा किया हम से अपना वादा और वारिस (उत्तराधिकारी) बनाया हम को उस ज़मीन का कि हम ठिकाना बनाते हैं जन्नत में जहां चाहें।

(ज़ुमर : ७४)

फिर जन्नत में अल्लाह के इन मुत्तक़ी बन्दों को जो नेमतें और जो राहतें (आराम) और लज़्ज़तें (मज़ा) अ़ता फर्माई जायेगी, हक़ तो यह है कि इस दुनिया में उन का सही इल्म भी किसी को नहीं हो सकता। फिर भी हम ने पहले जो दो चार आयतें इस विषय की लिखी हैं, उन से जो कुछ थोड़ा सा अनुमान हो सकता है ; ईमान वालों में जन्नत का शौक़ और उस की तलब व तड़प पैदा करने के लिये बिलाशुबह वह भी काफ़ी है। इस सिलसिले में सूरए – सॉद की यह आयत पढ़ कर भी अपनी ईमानी रूह् को ताज़ा कर लिया जाये :–
तर्जमाः– बेशक मुत्तक़ियों के लिये है, अच्छा ठिकाना, बाग़ हैं ग़ैर फ़ानी (न ख़त्म होने वाले), खुले हुये हैं उनके लिये दरवाज़े, बैठे हैं उन में तकिया लगाये, मँगाते हैं मेवे और शरबत, और उन के पास औ़रतें हैं नीची निगाह वालियां, सब एक उ़म्र (आयु) की। यह है वह (इनाम) जिस का वादा किया जा रहा है तुम से रोज़े – हिसाब (हिसाब के दिन) के लिये, बेशक यह है हमारा रिज़्क़, जिसको कभी निबड़ना नहीं। (स्वाद : ४६–५४)

क़ुरआने – मजीद ने तक़्वे की तालीम व तरग़ीब और उस की फ़ज़ीलतें व बरकतें और उस पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इनाम और बशारतें सुनाने के साथ एक अहम एलान तक़्वा के बारे में यह भी फ़र्माया है कि बन्दों की छोटाई बड़ाई और उन की पस्ती व बलन्दी का मेयार (कसौटी) अल्लाह के नज़दीक बस तक़्वा ही है। इसलिये जो तक़्वा में जितना ऊँचा और जितना मुमताज़ है, अल्लाह की निगाह और उस के दरबार में वह उतना ही ऊँचा और उतना ही मुमताज़ है। और जो तक़्वे में जितना नाक़िस और जितना घटिया है वह अल्लाह की निगाह और उस के दरबार में उतना ही घटिया और बेक़ीमत है।

सूरए– हुजुरात में इर्शाद है :–
तर्जमा :– अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वह है जो तक़्वा में बड़ा है। (हुजुरात : १३)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अंजाम की किसी को ख़बर नहीं

हज़रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) कहते हैं कि हम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और आप सच्चे और आप से ज़ियादः कौन सच्चा है कि इन्सान चालीस दिन अपनी मां के पेट में नुत्फ़ः रहता है। फिर चालीस दिन में ख़ून की फुतकी बनता है। फिर चालीस दिन में गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर फ़िरिश्ता भेजा जाता है, जो उसमें रूह फूँकता है। फिर चार बातों के लिखने का उसको हुक्म होता है। उसके (१) रिज़्क़ (२) उ़म्र (३) अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ और यह कि (४) वह नेकबख़्त होगा या बदबख़्त। क़सम है उस ज़ात की कि जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। कोई जन्नतियों के अ़मल करता रहता है। यहां तक कि जन्नत में और उसमें एक हाथ का फ़ासला रह जाता है। तो अल्लाह का लिखा ग़ालिब आ जाता है। और वह जहन्नम के अ़मल करने लगता है और जहन्नम में दाख़िल होता है। और एक आदमी दोज़ख़ियों के काम करता रहता है। यहां तक कि उसके और दोज़ख़ के दर्मियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है। उस वक़्त अल्लाह का लिखा ग़ालिब आता है। वह जन्नत के अ़मल करने लगता है। और जन्नत में दाख़िल हो जाता है।

हज़रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि उस दिन जहन्नम को सत्तर हजार लगामों के साथ लाया जायेगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते होंगे जो उसको खीचते होंगे।

हज़्रत नुअ़मान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि मैने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ियों में सबसे कम्तर अ़ज़ाब उसको होगा जिसके पांव के तलवों पर दो अंगारे रक्खे जायेंगे ; उन दो अंगारों से उसका दिमाग़ पकेगा।

और एक रिवायत है कि दोज़ख वालो में सबसे हल्के अ़ज़ाब वाला वह होगा जिसके दो जूते और दो तस्मे आग के होंगे जिनसे उसका दिमाग़ इस तरह़ पकेगा जैसे हांडी उबलती है ; और वह यह ख़याल करता होगा कि मुझसे ज़ियादः सख़्त किसी पर अ़ज़ाब नहीं हालांकि वह सबसे हल्का अ़ज़ाब होगा।

ह़ज़्रत समुरः (र०) बिन जुन्दुब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लह ने फ़रमाया आग उनमें से किसी के टख्नों को पकड़ेगी और किसी के घुटनों को और किसी के कमर तक होगी और किसी की हंसली को पकड़ेगी।

ह़ज़्रत इब्नि उ़मर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया लोग रब्बुल – आलमीन के पास खड़े होंगे। उनमें से बाज़ अपने पसीने में आधे कानों तक डूब जायेंगे।

ह़ज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसा ख़ुतबा फ़रमाया कि इससे पहले मैने कभी नहीं सुना।

आपने फ़रमाया, जो मैं जानता हूँ अगर तुम जान लो। तो कम हंसो और ज़ियादः रोओ। असह़ाब रसूलुल्लाह (स०) पर ऐसा गिर्यः तारी हुआ कि उन्होंने अपने चेहरों को छुपा लिया।

और एक रिवायत में है कि आंह़ज़्रत (स०) को अपने असह़ाब के मुतअ़ल्लिक़ किसी बात की ख़बर पहुंची। आपने ख़ुतबा फ़रमाया।

फ़रमाया कि मुझ पर जन्नत व दोज़ख़ पेश की गयी। मैने उस दिन की तरह़ बुराई–भलाई नहीं देखी अगर तुम जान लो जो मैं जानता हूं तो ज़ियादः रोवो और कम हंसों। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के असह़ाब पर इससे ज़ियादः सख़्त दिन नहीं गुज़रा। अपने चेहरों को छुपा लिया और रोने से आवाज़ न निकलती थी।

ह़ज़्रत मिक़्दाद (र०) से रिवायत है कि मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ से क़रीब कर दिया जायेगा। यहां तक कि उनसे एक मील के फ़ासला पर होगा। लोग अपने आमाल के बक़्दर पसीने में होंगे। उनमें से कुछ ऐसे होंगे जिनका पसीना टख़्नों तक होगा ; कुछ ऐसे होंगे जिनके घुटनों तक होगा ; बाज़ ऐसे होंगे जिनके मुंह तक आ जायेगा। फिर आपने दस्ते

मुबारक से मुंह की तरफ़ इशारः किया।

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़ियामत के दिन लोग पसीना, पसीना होंगे यहां तक कि उनका पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ जायेगा और मुंह तक आ जायेगा, यहां तक कि कानों तक पहुंच जायेगा।(बुख़ारी मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरः (रज़ि०) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे। आप ने एक धमाका सुना, फ़रमाया जानते हो यह क्या है। हमने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं आप (स०) ने फ़रमाया, यह एक पत्थर है। जो दोज़ख़ में सत्तर साल पहले फेंका गया था। अब जाकर वह आग में गिरा है। यहां तक कि उसके पेटे में पहुंच गया जिसका तुमने धमाका सुना।

हज़रत अ़दी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम में हर एक से अल्लाह बात करेगा। उसके और अल्लाह के दर्मियान कोई तरजुमान न होगा। जब वह अपनी सीधी जानिब देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेजा है। और बायें तरफ़ देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेज चुका और जब अपने आगे देखेगा तो उसके मुंह के सामने आग होगी। पस आग से बचो। अगरचिः एक खजूर के टुकड़े ही से क्यों न हो।

हज़रत अबूजर (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो तुम नहीं देखते वह मैं देखता हूं। आसमान चरचराता है। और उसको चरचराने का हक़ है। उसमें चार उंगल की भी जगह नहीं है मगर एक फ़िरिश्ता अपनी पेशानी अल्लाह तआ़ला के सामने सिज्दे की हालत में रक्खे है अगर तुम जान लो जो मैं जानता हूँ तो कम हँसो और जियादः रोवो। और तुमको अपने घरों में बिस्तरों पर मज़ा न आये। तुम चीख़ते और चिल्लाते हुए मैदान में निकल जाओ।

हज़रत अबू बरज़ः असलमी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, किसी बन्दे के क़दम न हटेंगे जब तक कि (चार बातों के मुतअ़ल्लिक़) न पूछ लिया जायेगा। (१) उसकी उ़म्र के मुतअ़ल्लिक कि किस में फ़ना की। (२) अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ कि क्या काम किये। (३) माल के मुतअ़ल्लिक़ कि कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया और (४) जिस्म के मुतअ़ल्लिक़ कि किसमें पुराना किया।

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी 'यौमइज़िन् तुहदिद्सु अख़्बारहा' फ़रमाया, जानते हो इसकी ख़बरें क्या हैं। उन्होनें अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आपने फ़रमाया, वह हर बन्दे और बन्दी पर गवाही देगी जो कुछ उसकी पुश्त पर है। कहेगी कि फ़ुलां दिन ऐसा हुआ फ़ुलां रोज़ ऐसा हुआ। यही इसकी खबरें हैं।

हज़रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं कैसे अ़ैश करूं। सूर फूकने वाला मुंह में सूर लिये है और इजाज़त पर कान लगाये है—कब फूंकने की इजाज़त हो कि फूंके। यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथियों को भारी मालूम हुई। आपने फ़रमाया 'हस्बुनल्लाहु निअ़मल्—वकील' कहो।

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसको खटका लगा वह रात ही रात निकल जायेगा और जो निकल गया वह मन्ज़िल को पहुच जायेगा। सुन लो अल्लाह का सौदा बहुत गरां है। सुन लो अल्लाह का सौदा जन्नत है।

हज़रत आ़यशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि लोग क़ियामत में नंगे पांव और नंगे बदन जमा किये जायेगे। मैने कहा या रसूलुल्लाह मर्द औरत सब, उनमें एक दूसरे को देखेंगे। आपने फ़रमाया मुआ़मला ऐसा सख़्त होगा कि किसी को उसकी फ़िक्र न होगी। (बुख़ारी मुस्लिम)

लेखकों से अनुरोध है कि वह स्वच्छ, सुन्दर तथा स्पष्ट लिखें। कठिन शब्दों के स्थान पर सरल शब्द लाने की चेष्ठा करें । पाठकों से अनुरोध है कि वह जब तब ५० पैसे के पोस्ट कार्ड पर सच्चा राही के बारें में अपनी पसन्द ना पसन्द की बात लिखें, हम उनके परामर्शों का स्वागत करेंगे।

पाठकों से यह भी अनुरोध है कि सच्चा राही फैलाने की चेष्ठा करें ताकि उसकी अच्छी बातें बहुतों तक पहुंच सकें।

(सम्पादक)

ग्यारहवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

खानदेस (बुरहानपुर) के फारूकी बादशाह

फिरोजशाह तुलगक ने खान जहां एक अमीर के लड़के मलिक राजी को खांदेस का क्षेत्र जागीर में दिया मलिक राजी तालनीर में आकर ठहरा। राजा भार जी को पहले आज्ञाकारी बनाया। लूट और भेंट (नजराना) के माल से पांच बड़े और दस छोटे हाथी दक्षिणी बादशाहों की तरह सजाकर दूसरे तुहफों (उपहार) के साथ सुल्तान फिरोज की सेवा में भेजे। सुल्तान ने प्रसन्न होकर तीन हजारी का पद प्रदान किया। कुछ दिनों के बाद उसके पास बारह हजार अनुभवी सिपाही इकट्ठा हो गए। उनके खर्च के लिए खांदेस की आमदनी काफी न हुई, इसलिए आस पास के राजाओं से नजराना (भेंट) वसूल करता।

मुहम्मद तुगलक के जमाने में मलिंक राजी ने जो आदिल खां के लकब से स्वतंत्र हो चुका था। सुल्तानपुर का क्षेत्र दबा लिया। मजफ्फर शाह गुजराती ने लड़कर वापस ले लिया। चूंकि मलिक राजी हजरत फारूक के. (अलै०) खांदान से था, इसलिए मुज़फ्फर शाह हमेशा उसका सम्मान करता। आदिल खां का १३६८ ई० (८०१ हि०) में स्वर्गवास हो गया।

आदिल खां के बाद नसीरूद्दीन फारूकी उस का लड़का तख्त पर बैठा। उसने विद्वानों और आलिमों को दरबार में इकट्ठा किया। नगर बुरहान पुर आबाद करके उसको राजधानी बनाया। राजा अहीर से आसीर का किलाछीन लिया। मालवा के बादशाह के लड़के गज़नीन खां से मिलकर सुल्तानपुर का क्षेत्र दबा लिया लेकिन अहमदशाह गुजराती ने जब पराजित किया तो नसीर खां किला बंद हो गया और मजबूर होकर माफी मांग ली। कुछ वर्षों के बाद अहमदशाह बहमनी के लड़के से अपनी लड़की की शादी कर दी १६६२ ई० (८३३ हि०) में मालावाड़ का राजा भाग आसीर में आया। नसीर खां ने अपने को कमजोर समझकर उसको सुल्तान बहमनी के पास भेज दिया। नसीर खां का भाई मलिक–इल्तिजार सल्तन का दावेदार था। उसने लड़कर नसीर खां को एक लड़ाई में पराजित कर दिया। नसीरूद्दीन खां इस पराजय से इतना दुखी हुआ कि १४३६ ई० (८४१ हि०) में मर गया।

नसीर खां का लड़का मीरान आदिल खां तख्त का मालिक हुआ। उसने गुजराती फौजों की सहायता से अपने चचा इल्तिजार को पराजित किया लेकिन १४४० ई० (८४४ हि०) में वह भी मर गया। फिर आदिल खां का लड़का मुबारक खां बादशाह हुआ जिसने १६ वर्ष से अधिक न्याय के साथ हुकूमत की। प्रजा सम्पन्न रही क्योंकि वह लड़ाई भिड़ाई से हमेशा बचता रहा। उसके बाद उसका बेटा आदिल शाह सानी (तृतीय) के लकब से बादशाह हुआ। उसने गोडवाड़ह और गढ़मण्डल के राजाओं को अपना पराधीन बनाया और कोलों और मीलों की डकैती को रोका। आसीर के किले के अतिरिक्त इसी पहाड़ी पर एक दूसरे किले मालीगढ़ बनाया। उसने बहुत सी इमारतें बनवाई। उस जमाने में बुरहानपुर बड़ा शानदार शहर बन गया। ४६ वर्ष से अधिक हुकूमत कर के १५०३ ई० (६०६ हि०) में उसका निधन हो गया।

उसका कोई लड़का नहीं था। इसलिए उसके भाई दाऊद खां तख्त पर बैठा। आठ साल के बाद १५६० (६१६ हि०) में उसका स्वर्गवास हो गया। दस दिनों तक उसका लड़का हुकूमत करने पाया था कि आलम खां नामी उसी खानदान का एक और बादशाह बन बैठा लेकिन दरबारी अमीरों की यह असहमत देखकर नसीर खां का लड़का आदिल खां तृतीय अपने नाना सुल्तान महमूद प्रथम गुजराती की सहायता से तख्त का मालिक हो गया। उसने निजामशाह बहरी से कुछ किले छीन लिये और कालना के राजा को भी अपने पराधीन बना लिया। वह १५१६ ई० (६२६ हि०) में बीमार होकर मर गया।

बाप के बाद मीरान मुहम्मद शाह तख्त का वारिस हुआ। उन दिनों अहमद नगर और बरार के बादशाहों में

लड़ाई हो रही थी। मीरान मुहम्मद शाह के द्वारा बहादुर शाह गुजराती ने उनमें सुलह करा दी मगर अहमद नगर के बादशाह निजाम शाह ने धोखे से कुछ किलों पर कब्जा कर लिया। इसलिए बरार और खान्देस के दोनों बादशाहों ने मिलकर उस पर हमला किया परन्तु दुर्भाग्य से उन्होने पराजय का मुंह देखा। उन्होने बहादुरशाह गुजराती से सहायता मांगी जिसने बरार के बादशाह और निजाम शाह दोनों को अपना बाजगुजार (सरकारी कर वसूल करने वाला) बनाया।

हिमायूं के चले जाने के बाद जब बहादुरशाह गुजराती ने दोबारा गुजरात पर कब्जा कर लिया तो उसके आदेश से मीरान मुहम्मद शाह ने मालवा के मुगल हाकिमों को निकाल दिया। बहादुरशाह के शहीद हो जाने पर गुजरात के सरदारों ने उसे बादशाह स्वीकार कर लिया। मीरानशाह गुजरात जाने की तैयारी में था कि १५३५ ई० (६४२ हि०) में उसका देहान्त हो गया।

मीर मुहम्मद शाह के लड़के छोटे थे। इसलिए उसके भाई मुबारक शाह तृतीय को तख्त पर बैठाया गया। कुछ दिनों के बाद जब इमादुलमुल्क गुजरात से भाग कर बुरहानपुर में आया तो मुबारक शाह एक सेना लेकर गुजरात विजय के लिए चला परन्तु महमूद गुजराती ने पराजित कर पहले की तरह कर देने पर उसको मजबूर कर दिया। १५६१ ई० (६६६ हि०) में बाज़बहादुर मालवा का बादशाह भाग कर बुरहान पुर आया और मुगल अफसर मुहम्मद खां उसके पीछे–पीछे बुरहानपुर तक लूटमार करते हुए पहुंचा। मुबारकशाह ने बरार प्रांत के हाकिस की सहायता से मुगलों को मुल्क से बाहर निकाल दिया। मुबारक शाह ३२ वर्ष हुकूमत कर के १५६६ ई० (६७४ हि०) में इस संसार से सिधार गया।

मुबारक शाह का बेटा मुहम्मद शा द्वितीय अब बादशाह हुआ सल्तनत के शुरू में चंगेज खां मरूची ने सुल्तान पुर और नजरबाद ले लिया और फिर यारनीर को भी लेना चाहता था कि मुहम्मद शाह ने बरार के हाकिम की सहायता से उसको वापस ले लिया। कुछ दिनों के बाद ३२ हजार की सेना लेकर गुजरात पर हमला कर दिया परन्तु पराजित होकर वापस गया। निजाम खां के खानदान के एक व्यक्ति ने निजामशाह के मुकाबले में बगावत की। मुहम्मदशाह ने इस बागी की सहायता की। निजामशाह बागी को पराजित करके बुरहानपुर आ पहुंचा। मुहम्मदशाह को मजबूरन किला बन्द होना पड़ा। आखिर तीन लाख रूपया देकर निजामशाह से सुलह की। १५७६ ई० (६८४ हि०) में वह बीमार होकर मर गया।

उसके नाबलिग लड़के हसन खां को तख्त से उतार कर के राजा अली खां उसका चाचा बादशाह हुआ। उस समय अकबर दिल्ली का बादशाह था। राजा अली खां अकबर से भी सम्पर्क रखता और निजाम शाह से भी मिला रहता। १५६३ ई० (१००२ हि०) में कुछ लोग निजाम शाह से विरोध करके उसके पास पहुंचे। उसने उनको नजरबन्द रखना चाहा परन्तु वह लडभिड़ कर अकबर के पास पहुंच गये और राजा अली की शिकायत की। अली ने राजा को भी उपहार भेजकर क्षमायाचना की इच्छा प्रकट की। १५६३ ई० (१००२ हि०) में अकबर ने दकिन पर फौजकाशी की। राजा अली ने मसलहत देखकर निजामशाह से मिल कर मुगलों का मुकाबला किया जब १५६५ ई० (१००४ हि०) में शाहज़ादा मुराद फिर दकिन विजय के लिए आया तोराजा अली ने शाहजादे का साथ दिया। युद्ध में दकिकन्यों की आतिशबाजी से राजा अली खां का देहान्त हो गया। उसके बाद उसका लड़का बहादुर खां बादशाह हुआ लेकिन अकबर से बागी हो गया। इसलिए फौज लेकर बुरहानपुर पहुंच गया और खांदेस पर कब्जा करके बहादुर को १५६८ ई० (१००६ हि०) में लाहौर भेज दिया।

राजाअली इल्मदोस्त था उसके पास बड़ा पुस्तकायल था। (जारी)

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

पक्षियां

मशहूर हमिंग बर्ड केवल ५ इंच लम्बी और ५ ग्राम से भी कम भारी होती है, लेकिन लंबे उड़ानों से पहले इतना खाना खा लेती है कि लगातार २४ घण्टे तक उड़ सके। फिर पक्षी इन यात्राओं में रनिंग वेदर कंडीशन का भी ख्याल रखते हैं, मसलन हवा के बहने की दिशा जैसी चीजें। यदि इन्हें हवा के अपॉजिट डायरेक्शन में उड़ान भरनी पड़े तो वे धीमी और नीची उड़ान भरते हैं।

पक्षियों की नजर बड़ी तेज होती है और उड़ते समय वे इनका बखूबी इस्तेमाल करते हैं। अपने रास्ते में पड़ने वाले विजुअल लैंडमार्क्स जैसे पहाड़, नदियों आदि की सहायता से अपना रास्ता तलाश लेते हैं। इस काम में सूरज भी उनकी मदद करता है। सूर्योदय और सूर्यास्त का ध्यान रखकर भी वे दिशाओं की जानकारी हासिल कर लेता है।

हिन्दुस्तान के कुछ ऐतिहासिक यथार्त

(हकायक)

आएरलैण्ड के ड्रामा लेखक डेनिस जास्टन ने एक बार कहा था कि देव मालाई कहानियां बनाई नहीं जाती बल्कि वह खुद पैदा हो जाती है और फिर वर्णन की जाने लगती हैं। उचित प्रतीत होता है कि हम कुछ सार्वजनिक भ्रमों (अवामी गलत फहमियों) के निवारण (अजाता) करने की कोशिश करें।

एक गलत प्रोयेगण्डा यह है कि हिन्दुस्तान में इस्लाम मुस्लिम हमलावरों के द्वारा आया

अधिकांश इतिहासकार अब इस बात पर सहमत है कि हिन्दुस्तान में इस्लाम अरब व्यायापारियों द्वारा आया न कि मुस्लिम हमलावरों द्वारा जैसा कि आम तौर पर ख्याल किया जाता है। अरब व्यापार के उद्देश्य से लम्बे समय तक दक्षिणी भारत में मालाबार तट पर आते रहे हैं अर्थात जिस समय इस्लाम का अरब में उदय नही हुआ था तभी से व्यापार का सिलसिला जारी था। एच० जी० रालिनसन अपनी पुस्तक **Ancient & Medieval India** में लिखते हैं।

"यह अरब मुसलमानों ने सातवीं सदी के आखिरी भाग में हिन्दुतान के तटीय नगरों में बसना शुरू किया। फिर उन्होनें हिन्दुस्तानी औरतों से शादियां की इसलिए उनको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और उनको इस्लाम के प्रसार की आज्ञा भी दी गई"

बी०पी० साहू अध्यक्ष इतिहास विभाग दिल्ली यूनिवर्सिटी की विवरण के अनुसार अरब मुसलमानों ने उने क्षेत्रों में विशिष्ट स्थान (इम्याजी मुकाम) प्राप्त करना आरम्भ किये जहां उन्होनें आठवीं और नवीं सदी में निवास इख्तियार किया था।

वास्तव में हिन्दुस्तान में पहली मस्जिद का निर्माण (तामीर) एक अरब व्यापारी के द्वारा ६२६ ई० में कोदंगलोर में किया गया था जो अब केरला के नाम से जाना जाता है। दिलचस्प बात यह है कि पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस समय जीवित थे। यह मस्जिद शायद संसार की चन्द पहली मस्जिदों में एक रही होगी। यह हकीकत (यथार्त) हिन्दुस्तान में मुस्लिम हमलाआवरों के आने से काफी पहले ही इस्लाम की मौजूदगी पर रोशनी डालती है।

सलीम और अनारकली की प्रेम कहानी एक मिथ्या (गलत बयानी है) :–

एक मामूली वेश्या मुगल सामाराज्य के उत्तराधिकारी (वलीअहद) के प्रेम में गिरिफ्तार हो जाती है। उसके नतीजे में मुगल उत्तराधिकारी अपनी प्रेमिका के लिए अपने बाप की वसीयत को चैलेंज करने के लिए तैयार हो जाता है। यह सलीम और अनारकली की कहानी है यह कहानी मुगले आज़म जैसी फिल्मों के जरिये काफी मशहूर हुई। अफसोस यह है कि प्रेम की यह कहानी एक मन गढ़ंत कहानी है। अनारकली का वजूद ही नहीं था और अगर वह थी भी तो उसका सलीम या उसके बाप अकबर से कोई संबंध का कोई प्रमाण नही मिलता है।

प्रोफेसर इरफान हबीब जैसे एक विख्यात इतिहासकार के बयान के अनुसार अनारकली की कहानी जहांगीर की मौत के लगभग चार साल बाद वजूद में आई। १६६० की कुछ पुस्तकों में संक्षिप्त में इस का जिक मिलता है। उसके बाद न तो किसी पुस्तक में इस का वर्णन किया गया है। नजहांगीर की जीवनी में इसका हवाला मौजूद है।

फिर भी अनारकली का नाम सलीम के साथ जोड़ा जाता है और वह शायद सलीम की मलका नूरजहां से भी अधिक मशहूर है। नईमुर्रहमान फारूकी प्रोफेसर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी कहते हैं कि इस आम विचार को हवाले में एक कमजोर सुबूत मकबरें की शकल में आ मौजूद हुआ है। यह मकबरा लाहौर में है और यह विश्वास किया जाता है कि यह अनारकली का मकबरा है जो जहांगीर ने बनवाया था।

यूरोपीय पर्यटक द्वारा और इस मशहूर कहानी के अन्तर्गत गढ़ लिये गए किस्से लोगों के विचार में सलीम और अनारकली की कहानी की जड़ों को मजबूत करते रहे हैं।

एक और गलत बयानी यह है कि "जोधा बाई अकबर की राजपूत बीबी का नाम था

यह आम ख्याल है कि अकबर की पहली राजपूत बीबी अजमेर के

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न :– कुछ लोगों का कहना है कि बाप अगर आदेश दे तो बीवी को तलाक़ दे देना चाहिये और दलील में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाक़िआ पेश करते हैं कि वह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ग़ैर मौजूदगी में उन के घर आए और बहू से घर के हालात पूछे बाद चीत में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कुछ नाशुक्री की बातें सुनीं या जैसे भी अन्दाज़ा लगाया हो बहू ही से यह कह कर चले गये कि इस्माईल आए तो कहना अपनी चौखट बदल दे, बहू ने अपने शौहर के बाप को नहीं पहचाना हज़रत इस्माईल को जब यह सन्देशा पहुंचा उन्होने बात समझ ली और बीवी से कहा वह मेरे वालिद थे और तुम को तलाक़ देने को कह गये हैं चुनांचि बीवी को तलाक़ दे दी।

दूसरा वाक़िआ हज़रत उमर (रजि०) का है उन्होने अपने बेटे अब्दुल्लाह को आदेश दिया कि अपनी बीवी को तलाक दे दो, वह उसे चाहते थे, तलाक़ देने से इनकार कर दिया, बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने पेश हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुल्लाह इब्नि उमर (रज़ि०) को आदेश दिया कि बाप का आदेश मान लो तलाक़ दे दो।

उत्तर :– उलमा ने इन दोनों वाक़िआत को ख़ास माना है अर्थात् यह उन्हीं के लिये विशेष आदेश था दूसरों पर यह लागू न होगा और फिर वहां दोनों जगह नबी का आदेश था और नबी का आदेश अल्लाह का आदेश है। अब यह कहा गया है कि बे सबब तलाक़ देना गुनाह है इसलिए अगर शौहर समझे कि बीवी को तलाक़ देने का कोई उचित कारण नहीं है तो केवल बाप के कहने से तलाक़ न दे मगर बाप का आदर करे।

मौलाना मुजीबुल्लाह सा० नदवी मर्हूम अपनी किताब इस्लामी फ़िक्ह भाग २ पृष्ठ १८२ पर लिखते हैं :–

"अगर कोई बाप अपने लड़के को तलाक़ देने पर मजबूर करे तो अगर उसे बीवी से कोई शिकायत नही है तो लड़के पर तलाक़ देना ज़रूरी नहीं है, तलाक़ शरीअत में ना पसन्दीदा समझी गई है और हुक्म है कि अल्लाह की नाफ़रमानी में किसी मख़्लूक़ की इताअत (आज्ञापलन) ज़रूरी नहीं है।

प्रश्न :– अगर किसी की बीवी से बदकारी का गुनाह हो जाए तो तलाक़ देना ज़रूरी है या नही ?

उत्तर :– अगर किसी की बीवी से ग़लती से ज़िना (व्यामिचार) का सुदूर हो जाए और वह उसे देख ले तो उसको तलाक़ देना ज़रूरी नहीं है, बशर्ते कि वह आइन्दा शौहर के साथ वफ़ादारी के साथ रहने का वादा करे और शौहर भी इसे पसन्द करे हदीस में है कि एक सहाबी की बीवी से ऐसी ग़लती हो गई तो उन्हों ने आप से ज़िक्र किया, आपने फ़रमाया तलाक़ दे दो, उन्होने कहा वह मुझे पसन्द है तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया अच्छा रख सकते हो। इस बिना पर फ़ुक़हा ने लिखा है कि "शौहर पर बदकार बीवी को तलाक़ देना वाजिब नहीं है। इस से यह भी सिद्ध हुआ कि इस बिना पर शौहर तलाक़ देना चाहे तो तलाक़ दे सकता है।

प्रश्न :– अगर कोई अपनी बीवी से कहे कि मैंने तुझे महर के बदले में तलाक़ दी तो ऐसी तलाक़ का क्या हुक्म है ?

उत्तर :– इस तरह कहने से तलाक़ बाइना पड़ेगी जिस में शौहर को रूजअ करने का इख़्तियार न होगा। अल्बत्ता दोबारा निकाह हो सकता है, निकाह के पश्चात शौहर उसे रख सकता है।

प्रश्न :– तलाक़ से रूजूअ करने का क्या मतलब है और रूजूअ किस तरह किया जता है ?

उत्तर :– जब कोई ख़ुदा न करे अपनी बीवी को एक तलाक़ या दो बार तलाक़ तलाक़ का लफ़्ज़ (शब्द) बोलकर तलाक़ दे तो यह तलाक़ रजई अर्थात् लौटा लेने वाली तलाक़ कहलाती है। इस सूरत में मर्द को अपना फ़ैसला वापस ले लेने का हक़ है औरत राज़ी हो या न हो।

रूजूअ करने का सहीह तरीक़ा यह है कि शौहर कम से कम दो आदमियों के सामने कहे कि मैने तलाक़ दी थी मगर अब नादिम (प्रश्चातापी) हूं और तलाक़ से रूजूअ करता हूं, या मैं दोबारा अपने निकाह में लेता हूं या फिर अपनी बीवी बनाता हूं इन सब जुम्लों (वाक्यों) से रूजूअ हो जाएगा

और बिना निकाह फिर दोनों मिया बीवी हो जाएंगे।

अगर अकेले में यही जुम्ले कह लिये जाएं तो भी रूजूअ हो जाएगा।

अगर जबान से कुछ न कहें लेकिन एकान्त में बीवी से मिल ले, चुम्बन आदि कर लें तब भी रूजूअ हो जाएगा परन्तु अच्छी विधि वही है जो पहले बयान हुई अर्थात कम से कम दो आदमियों के सामने रूजूअ करें। परन्तु याद रहे तलाक़े बाइन में रूजूअ का अधिकार नहीं, दोनों की रज़ामन्दी से दोबारा निकाह हो सकता है। इसी तरह कनाये (सांकेतिक) शब्दों में भी रूजूअ नहीं दोनों की रज़ामन्दी से दोबारा निकाह हो सकता है।

कनाये तलाक़ का उदाहरण :– कोई अपनी बीवी से कहे मुझे तेरी ज़रूरत नहीं या कहे निकल जा मेरे घर से इसी तरह का कोई भी जुम्ला बोले और तातपर्य उसका तलाक़ देना हो तो तलाक़ रजई नहीं तलाक़ बाइन पड़ेगी अर्थात दोनों राज़ी हों तो भी रूजूअ नहीं दोबारा निकाह हो सकता है।

याद रहे तीन तलाक़ तलाक़े मुगल्लज़ा कहलाती है इस में न रूजूअ है न ही दोनों की रज़ामन्दी से निकाह है, अल्बत्ता किसी और से निकाह हो और वह किसी सबब से तलाक़ देदे तो इददत के पश्चात दोनों निकाह पढ़ा सकते हैं। लेकिन बीवी हलाल करने के लिये हलाला करना अर्थात् किसी से यह तै कर के निकाह पढ़ाना कि मिलाप के पश्चात वह तलाक़ दे दे ताकि वह औरत पहले शौहर के लिय हलाल हो सके, यह बड़ी ही ख़राब रस्म है ऐसे लोगों पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सललम ने लअनत फरमाई है, इससे बचना बहुत ज़रूरी है ताकि हुजूर सललल्लाहु अलैहि व सल्लम की लअनत से बचा जा सके लेकिन अगर किसी ने यह लअनती काम किया तो अहनाफ़ के नज़दीक निकाह सहीह हो जाएगा। अल्लाह तआला ऐसे लअनती काम से बचाएं।

प्रश्न : क्या वहाबी लोग हज़रत बड़े पीर साहब के फ़ातिहे को रोकते हैं? यह वहाबी लोग कौन होते हैं?

उत्तर : मेरे भाई जब आप यही नहीं जानते कि वहाबी लोग कौन हैं तो उनके बारे में किसी सुनी सुनाई बात में क्यों पड़ गये। अब मेरी मअलूमात पढ़ लीजिए : सऊदी अरब में रियाज़ के पास एक जगह उऐना है वहां के एक बड़े आलिम मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब थे, बाप बेटे दोनों आलिम थे, इस्लामी मस्लकों में इमाम अहमद बिन हंबल (रह०) की पैरवी करने वाले थे, उन्होंने सऊदिया में फैली बिदआत को ख़त्म करने में बड़ा काम किया, मौजूदा सऊदी हुकूमत के बानियों ने उनका साथ दिया, उस वक्त की शरीफ़ हुकूमत से मुक़ाबला हआ इस तरह शरीफ़ हुकूमत के ज़रिये दुन्या में मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब को बदनाम किया गया, उनके ज़माने में और उनके इलाक़े में दूसरी बुराइयां तो थीं मगर बड़े पीर साहब के मौजूदा फातिहे का रवाज ही न था तो वह कैसे रोकते "किताबुत्तौहीद" उन की मशहूर किताब है उन्होंने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी एक अच्छी किताब लिखी है। हिन्दोस्तान में जिन उलमा ने दीन में दाख़िल नई बातों की मुख़ालिफ़त की उनको एक साज़िश के तहत वहाबी कहा जाने लगा, हालांकि मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब किताब व सुन्नत पर अमल करते थे फिक़्ही मसाइल में अलमुग़नी देखते थे जबकि यहां के उलमा हिदाया शरह वक़ाया वग़ैरह पढ़ते पढ़ाते और उस पर अमल करते हैं, लिहाज़ा यहां किसी को वहाबी न कहना चाहए।

(पृष्ठ ११ का शेष)

राजा भरमल की सबसे बड़ी बेटी थी। यह आम लोगों के बयान के अनुसार जोधाबाई थी। और वह जहांगीर (सलीम) की मां थी जबकि इतिहास दूसरी तसवीर पेश करता है।

मशहूर इतिहासकार प्रोफेसर इरफान हबीब के बयान के अनुसार अकबर की राजपूत बीबी का जिक्र किसी भी मुगल लेख में नही मिलता। अबुलफजल ने अपनी पुस्तक "अकबर नामा" में इस नाम का जिक अकबर की बीबी के तौर पर नही किया है और नाही जहांगीर ने अपनी जीवनी "तुज्क जहांगिरी में जोधाबाई का जिक अपनी मां के रूप में किया है। प्रोफेसर नईमुर्रहमान फारूकी कहते हैं कि इसका कारण यह है कि अकबर की राजपूत बीबी का नाम जोधाबाई नही थी। यह वास्तव में जहांगीर की राजपूत बीबी का नाम था जिसका असलनाम जगत गोसीन था। चूंकि वह जोधपुर के शाही खानदान से संबंध रखती थी इसलिए उसको जोधाबाई भी कहा जाता था।

प्रोफेसर फारूकी के बयान के अनुसार वह शाही घराने की बहुत ही विशिष्ट महिला थी जहांगीर बादशाह की बीबी होने के अतिरिक्त वह खुर्रम की मां भी थी जो बाद में शाहजहां के नाम से मशहूर हुआ।

प्रोफेसर इरफान हबीब कहते हैं कि जोधाबाई के अकबर की बीबी होने की इस कहानी को सम्भवत: उन्नीसवीं सदी में हकीकत समझ लिया गया जब फतहपुर सीकरी के गाईड्स आम लोगों को गलत सूचना देते हुए जोधाबाई के नाम पर मलक–ए–अकबर की चादर डाल दी और आज भी यह विचार आम है।

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

(दूसरी किस्त)

अध्यापक बन्धुओं के लिये

हम कैसे पढ़ायें ?

विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

(२) " उपयोगिता" :– उपयोगिता के सिद्धान्त के मानने वाले कहते हैं कि हमें अपने बच्चों को वह चीज पढ़ानी चाहिये जो आगे चलकर उनके लिये लाभादयक और कारआमद साबित हों ओर इससे मुराद यह होती है कि वह चीजें उन्हें रोजी कमाने में सीधे तौर पर मदद दे सकें।

इस कसौटी की जांच :–प्रथम यह कि यह शिक्षण का बहुत तंग नजरिया है। इन्सान महज खाने के लिये जिन्दा नही है। बल्कि वह जिन्दा रहने के लिये खाता है। सिर्फ रोटी को जिन्दगी का मकसद बना लेनाा, इन्सानियत पर बड़ा जुल्म है। इस नजरयिा को अमल में लाने से हमारी तमाम सभ्यता और संस्कृत तथा तरक्की खतरे में पड़ जायेगी। अतः अध्ययन (आयाम) शामिल और नुमायां हों, न केवल आर्थिक पहलू बल्कि तहजीबी भी।

द्वितीय यह कि एक लोकतांत्रिक शिक्षा व्यवस्था में किसी बच्चे के लिये पहले से किसी विशेष व्यवसाय को निश्चित कर देना न सिर्फ उसके साथ नाइन्साफी है बल्कि इससे कुछ लोकतन्त्र की कारकर्दगी को बड़ा सदमा पहुचने की आशंका है। इसलिये कि शुरू ही से यह अन्दाजा नही लगाया जा सकता कि किसी बच्चे में कौन सी विशेष क्षमता है ओर वह आगे चल कर कौन सा काम खुशी और मेहनत से कर सकेगा।

(३) "मालूमात" :– कुछ लोग इस समस्या के समाधान के लिये कि विषयों का चयन क्योकर किया जाये, "मालूमात" की कसौटी तजबीज करते है, अर्थात् उन का विचार है कि "ज्ञान" मालूमात की गर्ज से होना चाहिये। उन के नजदीक ज्ञान प्राप्ति स्वयं एक उद्देश्य है, चाहे इससे और कोई चीज हासिल हो या न हो।

इस कसौटी की जांच :–इ स नजरिया के नतीजे भी इतने ही हानिकारक हैं जितने पहले उल्लेख किये गये नजरियों के "मालूमात" के अर्थ महज यह सबक लिये गये हैं कि कुछ घटनायें, नियम और कानून आदि रट लिये जायें, ओर उनको जरूरत के समय दुहरा दिया जाये। इसका नतीजा यह हुआ कि "शिक्षण" में परीक्षा को असाधारण हैसियत हासिल हो गयी है। यह कहना बेजा न होगा कि हमारी तमाम शैक्षिक व्यवस्था का केन्द्र "परीक्षा" है। हमारे विद्यालयों में जो कुछ पढ़ाया ओर सिखाया जाता है उसका मकसद बस इतना है कि परीक्षा में सफलता प्राप्त हो जाये ओर सच पूछिये तो "इम्तेहान की पूजा करना" विद्यार्थी के जीवन का मकसद बन गया है। इसके कारण उसमें हासिल करने का सही शैक पैदा ही नही होने पाता। मन को कोई चीज भी इतना नही थकाती जितना कि असम्बद्ध घटनाओं का रटना और विशेषकर ऐसी घटनाओं का जिनका जीवन से कोई संबंध न हो। ऐसी दशा में अगर हमारे बच्चों को आमतौर पर मानसिक तथा बौद्धिक कार्यो से नफरत हो गयी है तो इस में कोई आश्चर्य की बात नही है।

सही पैमान :– अतः यह बात साफ हो गयी कि उपर्युक्त कसौटियों में से कोई भी कसौटी अपने आप में दुरूस्त नही। कोई भी व्यस्तता जो हम बच्चे के लिये तजवीन करें किसी एक सिद्धान्त पर पूरा उतरना चाहिए जो जीवन की पूर्णता के लिए जरूरी है। बच्चे का बहुमूल्य समय ऐसी व्यस्तताओं में खर्च नही किया जा सकता है जो सिर्फ एक मकसद को पूरा करने के लिए तैयार हो जाना है। और अपने पूर्वजों की तहजीब तथा मान्यताओं की बेहतरीन चीज अपना लेना है। अध्यापक को चाहिए कि वह इन चीजों को इस अन्दाज में तरतीब दे कि वह बच्चे के सोपानवार मानसिक तथा शारीरिक विकास का हर पग पर साथ दे सकें। इनके चयन में किसी कृत्रिम नजरिया को राह न दी जाये बल्कि बच्चे की अभिरूचि और दिलचस्पियों की रौशनी में इन्हें चुना जाये। क्यों कि बच्चा खुशी से सिर्फ उस चीज को अपने व्यक्ति में समाहित कर सकेगा जो उसकी तबीयत के अनुरूप है। मसलन बच्चा खेलना चाहता है, शुरू में अकेला और बाद में दूसरे बच्चों के साथ। विद्यालय में इसके लिये मौका दिया जाये। बच्चा सीखना चाहताहै क्योंकि उस को खुदनुमाई, नकल आदि से तस्कीन होती है। अतएव और सीखने रहने का इन्तेजाज करें, ओर इन तमाम व्यस्तताओं को एक दूसरे से इस प्रकार जोड़े कि वह शिक्षा के सबसे ऊँचे मकसद के हासिल करने अर्थात् एक

बहुयामी तथा उम्दा शखसियत के बनाने में सहायक हो विद्यालय की ऐक्टीविटीज का बच्चे के समाजी माहौल से भी गहरा तअल्लुक होना चाहिए इसलिये कि सीखने का बेहतरीन जरियः समाज है और शिक्षा में सार्थकता भी सिर्फ इसी सूरत में पैदा हो सकती है।

पाठ्यक्रम की छोटी छोटी बातों को निर्धारित करते समय इस बात पर भी गौर करने की जरूरत है कि बच्चा स्कूल में कितनी मुद्दत और अपनी उम्र के किस दौर में रहेगा। पाठयक्रम बनाने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह सांस्कृतिक (तहजीबी) लेहाज से मालामाल हो। अर्थात् उस में नस्ले इन्सानी की वह तमाम जरूरी दिलचस्पियां शामिल हों जिन्हें इन्सान ने अपनी जिन्दगी को बेहतर तथा खुशगवार बनाने की कोशिश में हासिल किया है।

पाठ्यक्रम बनाने के सिद्धान्तः— पाठ्यक्रम बनाने में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये :—

१. बच्चे की प्रवृत्ति (फितरत), उसके पैदाइशी मैलानात, अभिरूचि, उस की दिलचस्पियाँ और सलाहियतें।

२. उसके माहौल की विशेष समाजी जरूरतें।

३. मुद्दत तालिब इल्मी।

४. इन्सानी नस्ल की बड़ी और विशाल दिलचस्पियाँ, शारीरिक तथा नैतिक, प्रशिक्षण, साहित्य तथा समाज विज्ञान, ललितकलायें, गायन और ड्राइंग, गणित तथा सामान्य विज्ञान आदि।

सुझाव :— शिक्षा का उद्देश्य क्या है ? उस्मानिया ट्रेनिंग कालेज, हैदराबाद दकन का प्रकाशन "उसूले तालीम" लेखक रेमान्ट का पहला अध्याय भी पढ़िये और बताइये कि मौजूदा प्राइमरी स्कूलों के पाठ्यक्रम में उनकी झलक किस हद तक नजर आती है।

२. कहते है, कि बच्चा स्वतः कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करता रहता है, उसे इल्म की कुरेद में मजा आता है, फिर उसे पाठयक्रम निर्धारित करने की क्या जरूरत है ?

३. पाठयक्रम बनाने में आमतौर पर कौन—कौन सी "मान्यतायें" ध्यान में रखी गयी है ? रेमन्ट की किताब का छठां अध्याय पढ़िये। नोट कीजिये कि इसमें हर मान्यता को समझाने के लिये क्या मिसालें दी गईं है।

४. "मानसिक प्रशिक्षण" की कसौटी की मनोवैज्ञानिक बुनियाद क्या है ? बुद्धि की इस कल्पना के बारे में मौजूदा मनोवैज्ञानिकों की क्या राय है ?

५. "उपयोगिता" और "मालूमात" की कसौटियों की जांचिये कि उनका हमारे पाठयक्रम से क्या तअल्लुक है ? पाठयक्रम में क्राफ्ट दाखिल करने में "उपयोगिता" के उसूल का कहां तक दखल है ?

६. पाठयक्रम की सही कसौटियों को सामने रखते हुए प्राथमिक विद्यालयों में चल रहे पाठयक्रम को जांचिये।

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(पृष्ठ १६ का शेष)

ईमानदारी से पैदावार के दो भाग कर देते थे और कह देते थे कि इन दो में से जो चाहे ले लो, यहूदियों ने अपने चलन के हिसाब से उन्हें भी रिश्वत देनी चाही, आपस में चन्दा करके औरतों के कुछ जेवरात इकट्ठा किए और कहा कि इसे कबूल कर लो और उसके बदले में हमारे भाग में बढ़ोत्तरी कर दो, यह सुनकर हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया ऐ **यहूदियो!** अल्लाह की कसम अल्लाह **तआला की** पूरी मखलूक में मैं तुम्हें **सबसे** ज्यादा ना पसन्द करता हूं लेकिन यह चीज मुझे जुल्म करने पर उभार नही सकती और जो तुमने रिश्वत पेश की है वह हराम है। हम (मुसलमान) उसको नहीं खाते। यहूदियां ने उनकी बातें सुनकर कहा यही वह (इन्साफ) है जिसके कारण आसमान व जमीन काइम (स्थिर) हैं। (मुवत्ता मालिक)

इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अफसरों को जनता से गिफ्ट और भेंट लेने से मना किया है। (अबूदाऊद) एक बार एक ज़कात वसूल करने वाले कर्मचारी ने कहा यह माल जकात का है और यह मुझे गिफ्ट मिला है यह सुनकर आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर खड़े हुए और यह तकरीर (भाषण) का, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला की तअरीफ के बाद फरमाया : कर्मचारियों का यह क्या हाल है कि हम उसको भेजते है तो आकर कहता है कि यह तुम्हारा है और यह मेरा। वह अपने मां या बाप के घर बैठ कर नहीं देखता कि उसको गिफ्ट व तोहफे मिलते हैं या नही कसम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है। वह उसमें से जो ले जाएगा वह कियामत में अपनी गर्दन पर लाद कर लाएगा, ऊंट गाय, बकरी जो भी हो, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार हाथ उठा कर फरमाया : "ऐ अल्लाह" मैंने पहुंचा दिया। (बुखारी)

इस तकरीर (भाषण) में आप ने जो कुछ फरमाया वह गुलूल (माले गनीमत से चोरी करना) वाली आयत की तफ्सीर है। (इरफान नदवी फारूकी)

घूस

अल्लामा स० सुलैमान नदवी

किसी के धन व दौलत से नाजाइज फाइदा उठाने की एक शक्ल रिश्वत है। रिश्वत का अर्थ यह है कि किसी नाहक कार्य या अपने गलत उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी बड़े अधिकारी या कर्मचारी को कुछ देकर अपना काम निकाल लें।

पहले अरब काहिन (ज्योतिषी) अपनी झूठी मूटी गैबी ताकत (अप्रत्यक्ष शक्तियों) की बुन्याद पर मुकद्दमों का फैसला किया करते थे। जिनको काम होता वह उनको मजदूरी या रिश्वत के रूप में कुछ भेंट चढ़ाया करता था। इसको हुल्वान (मिठाई) कहते थे। इस्लाम आया तो अंधविश्वास का यह दफ्तर ही उड़ गया। इस पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काहिन के हुल्वान यानी ज्योतिषी को रिश्वत व भेंट से विशेष कर मना फरमाया था (तिर्मिजी)। अरब में यहूदियों के मुकद्दमें का फैसला उनके अहबार (उलमा) व सरदार करते थे। और चूंकि वह धन व दौलत के हिसाब से वर्गो में बंट गए थे इसलिए उनकी दिली इच्छा यह होती थी कि कानून सबके लिए समान न हो। इसलिए कानून से बचने के लिए खुले आम रिश्वत देते थे और उनके जज व ज्योतिषी खुलेआम रिश्वत लेते थे और एक का हक दूसरे को दिलाते थे। और रिश्वत लेकर वह तौरात के हुक्मों पर अपनी लालसा पूरी करने के लिए पर्दा डाल देते थे। (बुखारी) तौरेत के कानून में यहूदियों ने जो फेर बदल किया उसका एक बड़ा कारण यही घूसखोरी थी। कुरआन की इस आयत में इसी गुनाह से पर्दा उठाया गया है। "अल्लाह तआला ने किताब से जो उतारा उसको छिपाते हैं और उसके द्वारा थोड़ी सी कीमत हासिल करते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं। अल्लाह तआला उनसे कियामत के दिन बात न करेगा न उनको पाक साफ करेगा ओर उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।
(सूरा बकरा आयत १७४)

पेट में आग भरना इसलिए फरमाया कि यहूदी इस दुन्या की थोड़ी सी लालच में आकर अल्लाह के हुक्म व आदेश में हेरफेर और अल्लाह तआला की चाहत में फेर बदल पेट ही के लिए करते थे। इसलिए यही सजा उनको मिलेगी। इब्ने जरीर तबरी ने इस आयत की तफ्सीर में लिखा है कि यहूदी सरदार अपने उलमा को इसलिए रिश्वत देते थे कि आप के हुलिया व सिफत (गुण) के बारे में जो कुछ लिखा है वह आम लोगों को न बताएं। लेकिन कुरआन के अध्ययन से साफ पता चलता है कि वह अल्लाह तआला के हुक्मों में समान रूप से फेर बदल किया करते थे और उसके द्वारा दुन्या की दौलत कमाते थे। सूर माइदा में उनकी इस हराम खोरी को दो जगह जिक किया गया है।

"और तू उनमें से बहुतों को देखेगा कि वह गुनाह अत्याचार और हराम खाने पर दौड़े पड़ते हैं। क्या बुरे काम हैं जो वह करते हैं। और उनके विद्वान व पुरोहित उनको गुनाह की बात कहने और हराम खाने से क्यों नही रोकते कितना बुरा काम है जो वह करते हैं।" (सूरः माइदा)

"झूठ के बड़े सुनने वाले और हराम के बड़े खाने वाले" (सूरः माइदा) कुरआन की एक दूसरी आयत को भी तर्क के लिए यहां पेश किया जा सकता है "और आपस में एक दूसरे का माल नाजाइज ढंग से न खाओ ओर न माल को हाकिमों तक पहुचाओं ताकि लोगो के माल का कुछ हिस्सा गुनाह से खा जाओ ओर तुम जान रहे हो।" (बकरा)

इस आयत का जो अनुवाद किया गया है उस हिसाब से यह आयत रिश्वत के रोकने और उसके नाजाइज होने के बारे में बिल्कुल साफ और स्पष्ट है। इस अनुवाद को कुछ बड़े मुफस्सिरीन ने किया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिश्वत लेने वाले और देने वाले दोनों पर लअनत फरमाई है (अबूदाऊद) रिश्वत देने वाले पर इसलिए की वह जुर्म व अपराध की मदद करता है और अपराध की सहायता करना कानून और अखलाक दोनों के अनुसार सही नहीं है।

खैबर के यहूदियों से जमीन के आधे–आधे पैदावार पर समझौता हुआ था कि आधी यहूदी लेंगे और आधी मुसलमान। जब फसल के बंटवारे का समय आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजते थे। वह

(शेष पृष्ठ १५ पर)

क़ादियनियत: संक्षेप में

एन० साकिब अब्बासी गाजीपुरी

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दौर में अंग्रेजी साम्राज्य के काले बादल समस्त भारत पर पूरी तरह छा चुके थे। लोगों में मानसिक बेचैनी व अन्तर्विरोध शबाब पर पहुंच चुकी थी। यहां एक ही समय में पूर्वी व पश्चिमी सभ्यताओं, प्राचीन व नई शिक्षा पद्धति और इस्लाम व मसीहीयत में जंग का बाजार गरम था कि अचानक मुसलमानों के अन्दर से एक फित्ने ने सर उठाना शुरू किया। वह फित्ना गुलाम अहमद कादयानी के नुबुव्वत के दावे का था जो कि पंजाब से उठा था।

दरअस्ल बात ये है कि उन्नीसवी सदी के अन्तिम चरण में हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी हजरत सैय्यद अहमद शहीद ने अंग्रेजों के विरूद्ध जो आन्दोलन चलाया उससे मुसलमानों में जेहाद व कुर्बानी की आग भड़क उठी, उन के हृदय में इस्लामी हौसलामन्दी व बहादुरी ठाठे मारने लगी और वह लाखों की संख्या में सर हथेलियों पर लिये इस आन्दोलन के झंडे तले इक्ट्ठा होने लगे जिनकी सरगर्मीयां ब्रिटिश सामाज्य के लिये परेशानी का कारण थी। उधर सूडान में शेख अहमद सूडानी व अफगानिस्तान में सैय्यद जमालुद्दीन अफगानी ने जेहाद का नारा बुलन्द करके अंग्रेजों की नाक में दम किया हुआ था। अंग्रेजों को मालूम था कि ये चिन्गारी अगर भड़क उठी तो फिर नियंत्रण में नही आएगी। इन आन्दोलनों को मान्यता व प्रसिद्धि पाते देख वह बुरी तरह भयभीत हुऐ और उन्होने मुसलमानों के हालात का गहरा अध्ययन किया था अतः उन्हें ज्ञात था कि इस्लाम ही उन्हें गर्मा सकता व सुला सकता है। इसलिए मुसलमानों पर नियंत्रण पाने का एकमात्र रास्ता ये है कि उनके धार्मिक पथ पर उथल–पुथल मचाई जाये। इसी योजना के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने ये तय किया कि मुसलमानों ही में से किसी व्यक्ति को एक उच्चस्तरीय धार्मिक पद देकर उभारा जाये ताकि मुसलमान अकीदत के साथ उसके इर्द–गिर्द जमा हो जाऐं और वह व्यक्ति मुसलमानों को ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति वफादारी और सत्यता का ऐसा पाठ पढाये कि फिर अंग्रेजों को मुसलमानों से कोई भय न रहे। इसलिए उन्होनें मिर्जा अहमद कादयानी का फित्ना खड़ा किया क्योंकि मुसलमानों का मिजाज बदलने के लिये इससे उपयुक्त कोई षडयंत्र कारगर नही हो सकता था।

मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी जो मानसिक असन्तुलन से पीड़ित था और बड़ी शिद्दत से ख्वाहिश रखता था कि वह एक नये धर्म का संस्थापक, बने, उसके कुछ भक्त व श्रद्धालु हो और इतिहास में उसका वैसा ही नाम व मुकाम हो जैसा कि जनाबे रसूल हज़रत मुहम्मद सं० का है इसलिए वह अंग्रेजों को इस कार्य हेतु सटीक व्यक्ति प्रतीत हुआ और मानो उन्हें उसके व्यक्तित्व में एक एजेंट मिल गया जो उनके षडयंत्र को सफल बनाने के लिये मुसलमानों में कार्य करें। अतः गुलाम अहमद ने बड़ी तेजी से कार्य प्रारम्भ किया, पहले मन्सबे तज्दीद का दावा किया फिर तरक्की करके इमाम मेंहदी बन गया। कुछ दिन और गुजरे तो १८९१ में मसीहेमोउद होने की कथित बशारत हो गई ओर आखिरकार १९०१ में नबुव्वत का सिंहासन लगा दिया। अंग्रेजों ने भी इस षडयंत्र की भरपूर सपरस्ती की। गुलाम अहमद ने भी सरकार के इन उपकारों को फरामोश नही किया और हमेशा इस बात को स्वीकर किया कि उसकी उपज ब्रिटिश साम्राज्य की देन है अतः वह अपनी लेखनी में वफादारियों को गिनाते हुए लिखता है कि "मेरी उम्र का अधिकार हिस्सा इस ब्रिटिश साम्राज्य की हिमायत में गुजरा है और मैने जेहाद उन्मूलन व अंग्रेजो के समर्थन में इतनी पुस्तकें और इश्तेहार प्रकाशित किये है कि अगर वह पुस्तकें व पत्रिकाऐं इक्ट्ठा की जाऐं तो पचास अलमारियाँ भर सकती हैं।

गुलाम अहमद और उसके अन्ध भक्तों ने व्याख्या की है जो मुसलमान इस नये धर्म को न माने वह काफिर है, उनके पीछे नमाज और उनके यहां ब्याह रचाना जायज नही है अर्थात उनके साथ काफिरों जैसा व्यवहार किया जाना चाहिये। मिर्जाबशीरूद्दीन आइने सदारत में लिखता है कि जो मुसलमान मसीहे मौऊद (गुलाम अहमद कादियानी की) बैअत में शामिल न हुवा वह काफिर

और दायरे इस्लाम से बाहर है, और हम चूंकि मिर्जा साहब को नबी मानते है और गैर अहमदी आपको नबी नही मानते अतः कुरआन की शिक्षा के अनुसार किसी एक नबी का इन्कार भी कुफ्र है इसलिए गैर अहमदी काफिर है।

मुसलमानों के बीच ऐख्तेलाफ के सम्बन्ध में मिर्जागुलाम अहमद कादयानी का कहना है कि अल्लाह की जात और रसूले अकरम की नबुव्वत, नमाज, रोजा, जकात आदि हर एक में हमें मुसलमानों से ऐख्तेलाफ है। कादियानियत साफ तौर पर ऐलान करती है कि मिर्जा साहब न केवल सहाबा रज़ि० और औलिया अल्लाह से महान है बल्कि बहुत से नबीयों से सर्वोत्तम है। इसी प्रकार हजरत मुहम्मद सं० के सहाबा और गुलाम अहमद के साथियों में कोई अन्तर नही है। गुलाम अहमद का मर्तबा हजरत मुहम्मद स० के बराबर है। उसके उत्तराधिकारी खुलफाऐ राशेदीन के बराबर है। उसका शहर कादियान शर्फ में मक्का ओर मदीना का हम पल्ला है और कादियान का हज मक्का से कमतर नही बल्कि उच्चतम है।

हिन्दुस्तान के उलमा व अन्य विद्वानों ने इस फित्ने को समाप्त करने के लिये जबान व कलम को हथियार बनाया और वह इसके फैलाव को रोकने में कामयाब भी रहे, उनमें मौलाना, हुसैन अहमद बटालवी, मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी (संस्थापक दारूलउलूम नदवतुल उलमा लखनऊ) मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी और मौलाना अनवरशाह कश्मीरी का नाम सबसे आगे है और इस्लामी संगठनों में सबसे जोश व सरगर्मी से इस गिरोह के विरूद्ध जंग करने वाली तन्जीम मजलिसे अहरार रही है जिसके सेनापति सैय्यद अताउल्लाह शाह बुखारी थे। इसी सूची में इस्लाम के प्रसिद्ध चिन्तक व शाइर अल्लामा इकबाल रह० भी है जिन्होने अपनी लेखनी में साफ–साफ शब्दों में लिखा है कि कादियानियत नबुव्वते मुहम्मदी के खिलाफ खुली बगावत व षडयंत्र है, ये एक अलग धर्म है उसके मानने वाले एक अलग उम्मत है और ये महान इस्लामी उम्मत का कदापि अंश नही है। अल्लामा इकबाल रह० वह पहले व्यक्ति थे जिन्हों ने कादियानियों को मुसलमानों से अलग एक गैर मुस्लिम अल्पसंख्यक करार देने का ख्याल पेश किया।

कादियानियत ने मिर्जागुलाम अहमद को कथित नबुव्वत का ताज पहनाकर मानवता को उस स्तर तक शर्मसार किया जितना हजरत मुहम्मद सं० की नबुव्वत ने सर बुलन्द किया था। कादियानियत का अस्तित्व एक भयंकर पाप का अस्तित्व है जो कभी भी क्षमा योग्य नही है। अतः कादियानियत को समाप्त करने के लिये हर मुसलमान को उठ खड़ा होना चाहिये और उसके प्रति गंभीर उपाय करना चाहिये क्योंकि ये एक ऐसा नासूर है जिसे खत्म करने में ही भलाई है। अल्लाह हम समस्त मुसलमानों को इस फित्ने से महफूज रखे। आमीन !

(लेखक नदवा के छात्र हैं)

क़ादियानी इस्लाम से ख़ारिज हैं

क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआ़ला ने अपने आख़िरी रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को "ख़ातमन्नबीय्यीन" (ख़त्म करने वाला तमाम नबियों का बताया, खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया "मेरे बअ़द कोई नबी न होगा" लेकिन मिर्ज़ा क़ादियानी ने कहा कि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ और अपने को नबी बताया, उम्मत के उलमा के एअ़तिराज़ पर नुबुव्वत की क़िस्में गढ़ीं और अपने को ज़िल्ली व बुरूज़ी नबी बताया, ह़ज़ारों इल्हामात गढ़े जो उन की किताब "तज़किरा" में मह़फ़ूज़ हैं, कादियानी उसकी तिलावत करते हैं। साथ ही ह़ज़रत ईसा अ़लैहि स्सलाम की तौहीन की, मआ़ज़ल्लाह, नक़्ले कुफ़्र कुफ़्र न बाशद उनको शराबी और कस्बीयों से तअ़ल्लुक़ रखने वाला बताया और इसी तरह़ की बहुत सी बातें हैं जिन की बिना पर तमाम उलमाए उम्मत ने उस को इस्लाम से ख़ारिज बताया लिहाज़ा तमाम मुसलमान क़ादियानियों से दूर रहें वह आम लोगों को किताब व सुन्न से ग़लत मतलब लेकर बहकाते हैं। आम मुसलमानों को उन से यही कहना चाहिए कि तुम देवबन्द, बरेली, नदवा, जामिया सलफ़ीया मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा इन में से कहीं से अपने मुसलमान होने का फ़तवा मंगवा दो तो हमारे पास आओ वरना ख़बरदार न हम से तअ़ल्लुक रखो न हमारे बच्चों को मुफ़्त तअ़लीम दो।

अंगूर सुन्दरता को निखारता है और स्वस्थ रखता है

अंगूर के रस में कुदरत ने बहुत से लाभ छुपा रखे हैं। इसमें पाये जाने वाले विटामिन मानव स्वास्थ के लिए बहुत ही लाभदायक हैं। चुनानचि कई कम्पनियां दवा बनाने के लिये इसका प्रयोग करती हैं। अंग्रेजी शराबों में भी बुनियादी तौर पर इसका प्रयोग होता है। परन्तु इसमें आलकोहल मिलाने के कारण इसके सभी लाभ समाप्त हो जाते हैं। यदि इसमें अलकोहल न मिलाया जाए तो लुईस विश्वविद्यालय आफ फांस के अनुसार एक गिलास अंगूर का रस दिन भर के आवश्यक विटाभिन की जरूरत को पूरा कर देता है। परन्तु दुःख यह है कि कुदरत के इस मूल्यवान उपहार में अलकोहल मिलाकर शराब बनाई जाती है जो स्वास्थ के लिए हानिकारक है।

तमाम अंगूरों में काला अंगूर सबसे उत्तम होता है परन्तु यह बाजारों में कम पाया जाता है। इसमें ऐसे गुण पाए जाते हैं जो इंसान के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके अन्दर पाया जाने वाला निटरी ऑक्साइड धमनियों में ढीलापन लाता है जिसके कारण दिल की तरफ खून संचालन संतुलित और दिल के दौरे का खतरा कम रहता है।

काले अंगूर के पत्तों में भी कुदरत ने कई फायदे रखे हैं। अगर सीने में चुभन हो रही हो जिससे दिल के दौरे का संकेत मिल रहा हों और कोई मेडिकल सहायता सम्भव न हो तो इसके दो पत्ते जबान के नीचे दबा लिए जाए तो धीरे –धीरे चुभन समाप्त हो जाती है और दौरे का खतरा टल जाता है। अगर खाने के साथ अंगूर का सिरका प्रयोग किया जाए तो हाई ब्लड प्रेशर कंट्रोल कर लेता है। इसमें विटामिन "ई" की अधिक मात्रा पाई जाती है। इसके अन्दर विटामिन भरपूर होने के कारण कोलस्ट्रोल कंट्रोल में रहता है। इसमें ऐसे प्रोटीन पाये जाते हैं। जिससे दिल और धमनियों की व्यवस्था को लाभ मिलता है। अंगूर की इस किस्म में रिजर्वटर पाया जाता है जो हानिकारक बैकट्रिया तहस नहस करके रक्त संचालन (दौराने खून) और दिल के पट्ठों को नाकारा बनाने वाले प्रभाव को समाप्त करने में सहायक होता है। सूडान के एक रिसर्च सेंटर के अनुसन्धान के अनुसार अंगूर का रस दिमागी सक्ते के खतरे को ३० प्रतिशत कम करता है।

अगर महिलायें इसे नियमित तौर पर इस्तेमाल करें इनकी स्त्री सम्बन्धी प्रमुख बीमारियों के लिए लाभदायक है। अगर गर्भवती महिलायें इसका प्रयोग करें तो पेट में पल रहा बच्चा स्वस्थ रहेगा। मासिक धर्म बन्द होने की अवस्था में (सिन्नेयास) में पहुंचने वाली महिलायें चार हफते पाबन्दी से सुबह शाम इसका इस्तेमाल करें तो अच्छे नतीजे सामने आएंगे। खून में चिकनाई को कम करने, जिगर, हाईब्लड प्रेशर, धड़कन और सिर दर्द में बहुत लाभकारी है। मानो काले अंगूर का रस प्रकृति (कुदरत) की तरफ से एक ऐसा वरदान है जिस को जितना भी पिया जाए कम है। जहां तक सम्भव हो इसको पीने की व्यवस्था करें आपके स्वास्थ और सुन्दरता को निखारेगा।

नबी के उम्मतीयो !

बेहतर हो जहां में कि तुम उम्मत हो नबी की
अम्रो निही का काम ये सुन्न है नबी की
कोशिश तुम्हारा काम हिदायत है रब के हाथ
हर एक को पहुंचाओ बस तुम तो नबी की बात
मग़रिब की तुम तहज़ीब को मश्रिक का सबक़ दो
मश्रिक की तुम तफ़्रीक़ को वहदत से बदल दो
इस्लाम पे जीना है तो ईमान पे मरना
इस के सिवा की बात पर तुम कान मत धरना
या रब नबी पे अपने तू रहमत सदा उतार
उन पर सलाम भेज कर मुझ को मिले क़रार

ग्लोबल वार्मिंग– मानव अस्तित्व के लिए खतरा

विद्या प्रकाश

वैश्विक तपन (ग्लोबल वार्मिंग) के चलते अंटार्कटिका की बर्फ पिघल रही है। यदि संसार में ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ने की यही रफ्तार रही तथा अंटार्कटिका की बर्फ के पिघलने का यही सिलसिला रहा तो यह मानव आस्तित्व के लिए गंभीर संकट होगा। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार यदि अंटार्कटिका की बर्फ पूरी तरह पिघल जाती है तो महासागरों का जल स्तर १५ मीटर ऊंचा उठ जाएगा। परिणामस्वरुप भारत जैसे देश ७२ फीट पानी में समा सकते हैं।

इस संबध में भूगोलवेत्ताओं तथा मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार भूमंडलीय तपन (ग्लोबल वार्मिंग)के लिए विकसित राष्ट्रजिम्मदार है। वहां का चतुर्थ श्रेणि कर्मचारी तथा कम आमदनी वाला व्यक्ति भी वातानुकूलित कार्य तथा फ्रीज जैसी आधुनिक सुखा–सुविधाओं का आदी है। इसलिए पुरी दुनिया को जाने–अनजाने नुक्सान पहुंचाने में भी ये देशसबसे आगे है। कार्बन डाईआक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड तथा मिथेन जैसी ग्रीन हाउस गैसों का अपेक्षाकृत उत्सर्जन यही करते भूमण्डलीय तापमान की वृद्वि में इन गैसों का योगदान लगभग ६० प्रतिशत है। यह ज्यादातर जीवश्म ईधनों के जलने से पैदा होता है। तापमान में मिथेन का योगदान१५ से २० फीसदी है।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव आगमी समय में इतना भयंकर तथा खतरनाक होगा कि जलवायु परिवर्तन, तापमान वृद्वि, इन गैसों का योगदान लगभग ६० प्रतिशत है। यह ज्यादातर जीवाश्म ईधनों के जलने से पैदा होता है। तापमान में मिथेन का योगदान १५ से २० फीसदी है।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव आगामी समय में इतना भयंकर तथा खतरनाक होगा कि जलवायु परिवर्तन, तापमान वृद्धि अम्ल वर्षा, पराबैगनी किरणों की मेदन दर में वृद्धि और ओज़ोन परत तें क्षरण जैसे हानिकारक परिणाम सामने आएंगे।

विगत कुछ वर्षोसे वायुमंडल में पराबैगनी किरणों की बढ़ती मात्रा से तवचा कैंसर का खतरा बढ़ रहा है। इसका असर भारतीय उप–महाद्वीपवासियों की अपेक्षा विकसित राष्ट्र के गोरी चमड़ी वालों पर अधिक होगा। ये किरणें रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी प्रभावित करती है। साथ ही नेत्रों पर भी कुप्रभाव पड़ता है। ऊष्ण विषुवतीय देशवासी शारीरिक विकास में कमी का कुप्रभाव पड़ता है। ऊष्ण विषुवर्तीय देशवासी शारीरिक विकास में कमी का कुप्रभाव भी झेलेंगे। इससे देश की संचार व्यवस्था भी ध्वस्त हो सकती है। ऐसी भयानक विनास लीला से बचने के लिए मानव समाज को अभी से सावधान होना होगा विगत तीन चार सालों से कम वर्षा होने का प्रमुख कारण यह है कि बंगाल की खाड़ी से उठने वाला मानसून अब तीन सौ मीटर पूरब से उटता है। वह उत्तर प्रदेश में बारिश न करके उड़ीसा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सक्रिय हो जाता है।

प्रकृति से छेड़छाड़ का अंजाम तथा नतीजा हमारे लिए घातक तथा नुकसानदेह साबित होगा। मानव जाति को महाविनास से बचाने के लिए हमे अभी से जागरुक तथा प्रयासरत होना चाहिए।

अक्षरों के यह उच्चारण किसी जानकार से सीखना अनिवार्य है।

अ, ह – कण्ट का अगला भाग

ख, ग – हलक (कण्ठ) का अन्तिम भाग

क – जबान की जड़ और तालू की मदद से क के स्थान से कुछ कण्ठ की ओर हट कर।

ज़ – जबान की बाईं करवट और ऊपर की बाईं दाढ़ों की रगड़ से।

र – जबान का सिरा और ऊपर वाले सामने के दांतों के नीचे न के स्थान के कुछ आगे।

ज च स – जबान की नोक और अगले दांतों के किनारे से मिला कर।

स, स़ ज़ – जबान की नोक और मिला अगले दांतों के बीच से निकालते हैं।

अ, ह – हलक का मध्य भाग।

क – जबान की जड़ और तालू की मदद से।

ज, श, य – जबान के बीच

(शेष पृष्ठ २१ पर)

इस्लाम फ्रांस का दूसरा बड़ा मज़हब

मु० शफीअ़

इस ग्लोबल विलेज में मुसलमानों पर चारो ओर से अन्याय किये जा रहे हैं। स्वाधीनता और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वालों को आतंकवादी और मज़हबके नियमो का पालन करने वालों को बुनियादपरस्त ठहराया जा रहा है, मगर इसके बावजूद दुनिया में इस्लाम की रोशनी तेज़ी से फैल रही हैं। हर आदमी यह जानना चाहता है कि इस्लाम है क्या? ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिट का हर छात्र जानना चाहता है कि इस्लाम वास्तव में कैसा मज़बह हैं। इसमें कौन–सी शक्ति है, जो सीधे दिलो को प्रभावित करती हैं।

एक नवमुस्लिम फ्रांसीसी नवजवान इस विषय में कहता कि मेरा फ्रेंच नाम मिशेल और इस्लामी नाम मुहम्मद इकबाल है। मैने जुलाई २००६ ई० में इस्लाम क़बूल किया। मैने सोर्बन यूनिवर्सिटी पेरिस से उच्च शिक्षा का डिप्लोमा प्राप्त किया है और एक जानी–मानी संस्था में इंजीनियर के पद पर काम कर रहा हूं। कई वर्षो तक जार्ज पित्पीडो इन्टरनेश्नल लाइब्रेरी में *इस्लामी लिट्रेचर* का अध्ययन करता रहा। फ्रंसीसी भाषा में कुरआन का अनुवाद भी पढ़ा। मेरे पिता किसी धर्म में आस्था नही रखते हैं। हमारे समाज में अपने मर्ज़ी का जीवन बिताने की स्वतंत्रा है।

कुछ दिनों बाद मैने महसूस किया कि मेरे भीतर से दीने हक़ की ज्योति फूट रही है। मैं जब टी०वी० पर हज का दृश्य देखता, यह देखता कि लाखों लोग तवाफ़ कर रहे हैं,ज्यारत और इबादत कर रहे हैं, तो मुझो बड़ी प्रसन्नता का अनुभव होता। दूसरी ओर इस्लाम विरोधी वर्ग इन्हें आतंकवादी ठहराने, जबरदस्ती अपना अधीन बनाने और अमानवीय अत्याचारों से उनका जीना दुभर करने पर तुले हुए हैं। वे दुष्प्रचार के संदेश देने वालों और इन्सानों से प्रेम करने वालों को आतंकवादी ठहराना चाहते हैं अफ़गानिस्तान, इराक़ और दूसरे कई देशों में लाखों इन्सानों का हत्यारा सवयं को लोकतंत्र का झंडावाहक बताता है।

ऐसे विरोधाभास को देखकर मेरा ईमान पक्का हो गया। दूसरी बात जिससे में प्रभावित हुआ कि मुसलमान मौत को गले लगा लेते है, मगर अल्लाह के अलावाकिसी के सामने नही झुकते। फिलिस्तीन और इराक़ के पीडित इनसान निहत्ते हैं, जबकि इस्रसईल, अमेरिका और ब्रिटेन के पास आधुनिक और विध्वंसक हथियार है, फिर भी ईमान की शक्ति को पराजित नहीं कर सके। मैं यह कहना चाहता हूं कि मुसलमानों को आज भी केवल खुदा का ही सहारा है, इसलिए मैंने यह सच्चा मज़हब क़बूल किया है। मुहम्मद इक़बाल ने आख़िर में कहा कि मेरी तरह और भी लाखों फ्रांसीसी हैं, जो सच्चे दीन से दिलचस्पी रखते हैं, अगर उनके पास अल्लाह का पैगाम पहुंचे तो वे सब भी दीने इस्लाम में दाख्लि हो सकते हैं। सच्चाई यह है कि फ्रांस में इस्लाम तेज़ी से फैल रहा है। अल–अरबीया टी०वी० की एक रिपोर्ट के अनुसार फ्रांस में ईसाई कैथेलिक वर्ग के बाद इस्लाम दूसरा सरकारी मज़हब स्वीकार किया गया हैं। फ्रांस में इस समय ७५–८० लाख मुसलमान बसे हुए हैं। वहां मस्जिदों की कुल संख्या ४ हज़ार के लगभग है। यूरोप में १९९९ ई० से २००५ ई० तक लगभग एक लाख २५ हज़ार लोगों ने इस्लाम कबूल किया है। ए०आर०वाई० डिजीटल चैनल लंदन की एक ख़बर के अनुसार पिछले वर्ष केवल लदंन मे ही ४० हजार लोगों ने इस्लाम क़बूल किया है और लगातार कर रहे हैं।

(पृष्ठ २० का शेष)

के हिस्से और तालू के बीच के हिस्से के संयोग से।

ल– जबान की नोक और तालू के संयोग से।

न – जबान का सिरा और ऊपर के दांतों के नीचे से मिलाकर ।

त द, त – जबान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से मिला कर।

फ़ – नीचे के होंठ के अन्दर और ऊपर के होंट के सिरे जब छूते हैं।

ब, म – दोनों होठों के स्पर्श से।

व– दोनों होंटों को समीप लाएं परन्तु फ की भांति छुएं नहीं।

नोट – किन्हीं भी दो अक्षरों के उच्चारण स्थान करीब हो सकते हैं परन्तु एक नहीं हो सकते, सीखें।

इन्सानी बादरी का हक़

सैयद सुलेमान नदवी

एक इन्सान पर दूसरे आदमी के आदमी होने की हैसियत से भी कुछ फराइज व कर्तव्य होते है। उन फराइज का पूरा करना हर मुसलमान की धार्मिक जिम्मेदारी है। तबलीग व दअवत अर्थात नानमुस्लिमों को इस्लाम की दअवत पहुंचाने का जो हुक्म है उसके दूसरे कारणों के साथ एक कारण यह भी है कि जिस चीज को एक मुसलमान सच समझता है उसका इन्सानी फर्ज है कि वह उसे दूसरे तक पहुंचा दे और उसे होशियार कर दे और इन्सानी भलाई चाहने का यह फल निकलना अनिवार्य है।

कुरआन पाक ने तौरेत के कुछ आदेशों को दोहराया है जिनमें से एक यह भी है। "और लोगों से अच्छी बात कहो" (बकरा ८३) लोगो से अच्छी बात करना और लोगों से अच्छाई के साथ पेश आना इन्सानियत का फर्ज है जो किसी विशेष दीन व धर्म से संबंध नही रखता। दीन व मजहब और (नस्ल) और कौमियत का अलग होना इस इन्साफ के बर्ताव से रोक न दे इसीलिए फर्माया "और तुम को किसी कौम की दुश्मनी इस पर न उभारे कि तुम इन्साफ व न्याय न करो, इन्साफ व न्याय (हर हाल में) करो कि यह बात तक्वा (परहे जगारी) के करीब है। (सूरः माइदा ८)

सभी प्रकार के बेरहमाना बर्ताव, जुल्म व अत्याचार जो एक आदमी दूसरे आदमी और एक कौम व जाति दूसरे कौम व जाति के साथ करती है उसका असली व वास्तविक कारण यही होता है कि वे एक दूसरे के साथ इन्साफ व न्याय नही करती बल्कि जुल्म व अत्याचार करने के लिए तैयार रहती है। यह आयत इन्सान के उस खराब व गन्दे तत्व के स्रोत को बन्द करती है। हजरत अबूहुरैरा और हजरत अनस रजियाल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया आपस में एक दूसरे से कपट न रखो, एक दूसरे से हसद (ईष्या) न करो और न एक दूसरे से मुंह फेरो और सब मिलकर अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई–भाई बन आजो। (बुखारी)

इस हदीस में इन्सानी ब्रादरी की वह तस्वीर खीची गई है जिस पर अगर ईमानदारी व सच्चाई से अमल किया जाए तो यह बुराई व फसाद से भरी हुई दुन्या अचानक जन्नत बन जाए।

"जो रहम नही करता उस पर रहम नही किया जाता" (बुखारी) यानी जो बन्दों पर रहम नही करता उस पर अल्लाह तआला भी रहम नही करता या यह कि जो दूसरे पर रहम नही करता तो दूसरे भी उस पर रहम नही करते।

मुस्तदरक हाकिम की हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "तुम जमीन वालों पर रहम करो तो आसमान वाला तुम पर रहम फरमाएगा। (मुस्तदरक हाकिम १५६/४)

यह हदीस आप (सल्ल०) जो पूरी दुन्या के लिए रहमत (कृप्या) बना कर भेजे गए हैं– की शिक्षा के रहमत के पहलू को कितनी अच्छाई के साथ उजागर करती है कि यह रहमत सबके लिए है। एक दूसरे अवसर पर आप (सल्ल) ने फरमाया "जो मुसलमान कोई पेड़ लगाएगा उससे जो आदमी या पक्षी भी खाएगा उसका सवाब (पुण्य) भी उस लगाने वाले को मिलेगा। (बुखारी) इस हदीस में आप (सल्ल) की शिक्षा का रहम का पहलू इन्सान ही पर नही बल्कि जानवरों पर भी छाया हुआ है।

एक बार आप (सल्ल) ने एक आदमी के बारे में बताया कि उसने एक पशु के साथ अच्छा व्यवहार किया तो उसे उसका सवाब मिला, सहाबा रजियाल्लाहु अन्हुम ने अल्लाह के रसूलः से पूछा क्या जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में भी सवाब है। आप (सल्ल) ने फरमाया हर जिगर रखने वाले के साथ अच्छा बर्ताव करने में सवाब है। (तिर्मिजी)

इस हदीस से पता चला कि हर जीवन धारी के साथ अच्छा व्यवहार करने से सवाब मिलेगा।

तिर्मिजी शरीफ में है कि रसूलल्लाह (सल्ल) ने हजरत अबूजर (रजि०) से फरमाया "जहां भी हो अल्लाह को याद रखो, बुराई के बाद भलाई कर लो तो वह उसको मिटा देगी लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो। (तिर्मिजी)

हजरत अबूहुरैरा रजि० कहते है कि एक बार आप (सल्ल) ने पांच बाते गिनाई उनमें से एक यह थी तुम

लोगों के लिए वही चाहो जो तुम अपने लिए चाहते हो तो मुसलमान बन जाओगे। (तिर्मिजी)

यहां आप (सल्ल०) ने अन्नास (लोगों) का शब्द प्रयोग किया है जिसमें सभी धर्म व मजहब के मानने वाले आ जाते हैं। इससे पता चला कि जब तक सम्पूर्ण इन्सानियत की भलाई का भाव व जज्बा दिल में न हो इन्सान पूरा मुसलमान नही बनता क्योंकि दूसरों के लिए वही चाहो जो अपने लिए चाहो", असलाक व नैतिकता की वह शिक्षा है जो इन्सानी ब्रादरी के हर प्रकार के हुकूक व अधिकार की बुन्याद है। एक दूसरी हदीस में है "तुम अपने भाई के लिए वही चाहो जो अपने लिए चाहते हो। भाई के शब्द का मतलब मुसलमान भी हो सकता है और एक साधारण आदमी भी क्यों कि सभी आदम अलैहिस्सलाम की औलाद है। तौरैत और इंजील में यह शिक्षा इन शब्दों में दी गई है "तुम अपने पड़ोसी को ऐसा चाहो जैसा कि तुम अपने आप को चाहते हो।" इस्लाम में "पड़ोसियों के हुकूक" के नाम से अलग पम्फलेट छप चुका है उस पर यहां एक दृष्टि डाल लेनी चाहिए कि सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने इस तअलीम की पैरवी (अनुसरण) में यहूदी ईसाई और (हिन्दू) पड़ोसियों का हक भी मुसलमान पड़ोसियों की तरह माना है।

सदका आदि जो गरीब लोगों पर खर्च किया जाता है तो स्वाभाविक बात है कि सबसे पहले यह धन मुसलमान गरीबों पर खर्च किया जाए। फिर भी हजरत उमर (रजि०) ने सदकः आदि में अपने शासन काल में नान मुस्लिम जिम्मी गरीबों के हक को भी माना है। इमाम अबूयूसुफ ने किताबुलखिराज में लिखा है कि एक बार हजरत उमर ने देखा कि एक बुढ्डा जो अन्धा भी था एक दरवाजा पर खड़ा भीख मांग रहा था, हजरत उमर रजि० ने पीछे से उसके कन्धे पर हाथ मारा और पूछा कि तुम्हें भीख मांगने की क्यों आवश्यकता आ पड़ी? उसने कहा जिजया देने और अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने बुढापे के कारण भीख मांगता हूं। हजरत उमर उसका हाथ पकड़कर अपने घर लाए और अपने घर से उसको कुछ दिया फिर उसको बैतुलमाल (सरकारी खजाना) के कोषाध्यक्ष के पास भेजा और उसके पास यह संदेश भेजा " कि इसको और इस जैसे लोगों को देखों, अल्लाह की कसम हम इन्साफ करने वाले नही होगे कि हम इसकी जवानी की कमाई तो खाए और उसके बूढे होने पर उसकी मदद छोड़ दें, कुर्आन ने सदकः देने की इजाजत फकीरों और मिस्कीन (गरीबों) को दी है, फकीर तो वह हैं जो मुसलमान है और मिस्कीन तो यह लोग अहले किताब (यहूदी ईसाई आदि) है। इनसे जिज्या न लिया जाए। (किताबुलखिराज पृष्ठ ७२) जिज्या के बारे में किए जाने वाले एतिराजात और उनके जवाब के लिए पढ़े हमारी किताब हजरत उमर रजि० अन्हु (इरफान)

इस्लाम का यह फैसला है कि जकात को छोड़कर दूसरे नफ्ली सदके नानमुस्लिमों को दिए जा सकते हैं। आप (सल्ल०) ने एक यहूदी खानदान को सदक दिया है, आप (सल्ल०) की बीवी व मुसलमानों की मां हजरत सफिया रजि० अन्हा ने अपने दो यहूदी रिश्तेदारों को तीस हजार रूपए का सदका दिया। इमाम मुजाहिद ने रिश्तेदारों के साझे के कर्ज को माफ करने को सवाब का काम बताया। इब्ने जुरैज जो हदीस के बहुत बड़े विद्वान है कहते हैं कि कुरआन ने सूरः दहर आयत न. ७ में कैदियों को खिलाने को सवाब बताया है खुली सी बात है कि सहाबा के पास जो लोग कैद होकर आते थे वह नान मुस्लिम ही होते थे।

हजरत अबू मैसरा, अम्र बिन मैमून और अम्र बिन शुरहबील रजि० यल्लहु अन्हुम ईद के सदके से ईसाई पुरोहितों की सहायता किया करते थे।

हजरत (सल्ल०) के जमाने में हजरत उमर (रजि०) ने अपने मुश्रिक भाई को गिफ्ट भेजा (बुखारी) और आप (सल्ल०) ने खुद कुछ सहाबा (रजि०) के उनके मुश्रिक मां–बाप के साथ अच्छा व्यवहार व धन की सहायता आदि की अनुमति दी (मुस्लिम) तफ्सीरी रिवायतों में है कि सहाबा (रजि०) जब धर्म की बुन्याद पर मुश्रिकों की मदद से हाथ उठाने लगे तो यह आयत उतरी (तबरी) "उनको रास्ते पर ले आना तेरे अधिकार की बात नही, लेकिन अल्लाह जिसको चाहता है रास्ते पर ले आता है और जो कुछ तुम खर्च करते हो अपने ही लिये खर्च करते हो। (बकरह : २७२) अर्थात खर्च करोगे माल तुम्हारी नेकी का सकाब हर हाल में मिलेगा।

मुस्नद अहमद में है कि मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए, आप (सल्ल) ने फरमाया कि तुममे से कोई उस समय तक पूरा मुसलमान नही होगा, जब तक वह दूसरे लोगो के लिए वही न पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है और जब तक वह आदमी से केवल अल्लाह के लिए प्यार न करें।

इस हदीस में इन्सानी महब्बत को पूरी इन्सानी ब्रादरी तक फैला दिया गया है। (अनुवाद – इरफान नदवी)

मिल्लत के एका पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत

इदारा

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का २०वां दो दिवसीय इजलास (१–२ मार्च २००८) इस घोषणा के साथ समाप्त हुआ कि वर्तमान परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए मुसलमानों को अपने दीन पर जमे रहना होगा और मिल्लत की एकता पर विशेष ध्यान देना होगा।

कोलकाता इजलास के घोषणा–पत्र में उन तमाम समस्याओं का उल्लेख किया गया जिनसे भारतीय मुसलमान दोचार हैं और उन मामलों में बोर्ड के मोक़िफ़ को पूरी तरह वाज़ेह कर दिया गया है। सम्मेलन के आखिरी सत्र में जनसभा का आयोजन किया गया था जो ६ घंटों तक चलता रहा। इस जनसभा में एक लाख से अधिक लोग मौजूद थे।

इस मौके पर देश के लगभग सभी जाने–माने आलिमे दीन ने अपने विचार रखे। जिन लोगों ने सभा को सम्बोधित किया उनमें बोर्ड के सदर मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी, मौलाना मुहममद सालिम कासिमी, मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी, मौलाना अरशद मदनी, मौलाना अकीलुलगरवी, (शीया आलिमें दीन), सैयद शहाबुद्दीन (पूर्व सांसद), डॉ० शकील समदानी, मौलाना खालिद गाजीपुरी, मौलाना यासीन अली उस्मानी, जनाब अब्दुस्सत्तार, जनाब यूसुफ शैख, मोलाना असदुल हक कासिमी, मुफ्ती नुरूर्रहमान बरकाती, मौलाना मुर्तजा, मौलाना आकिल, एडवोकेट इद्रीस अली, सांसद असदुद्दीन ओवैसी, मौलाना आकिल, एडवोकेट इद्रीस अली, सांसद असदुद्दीन ओवैसी, मौलाना अब्दुल वहाब खिल्जी और राष्ट्रीय सहारा के एडीटर जनाब अज़ीज बर्नी आदि खास थे।

इस अवसर पर बोर्ड के सदर मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने कहा कि इस्लाम दुश्मन शक्तियों की हर संभव कोशिशों के बावजूद न तो इस्लाम समाप्त होगा और न ही मुसलमानों का खातिमा होगा। अल्लाह ने कुरआन करीम की हिफाजत का वादा किया है। जब कुरआन की हिफाजत होगी तो अपने आप मुसलमानों की भी हिफाजत हो जाएगी।

उन्होने आगे कहा कि पूरी दुनिया में आये दिन मुसलमानों के खिलाफ साजिशें की जा रही है। उनके विरूद्ध निराधार प्रोपगैडों की मुहिम चलायी जा रही है। लेकिन इस्लाम और मुसलमान दोनों का वजूद बरकरार है। इसके लिए हमें अल्लाह का शुकगुजार होना चाहिए। अल्लाह के इस करम का हकदार बनने के लिए हम अहकामे खुदावन्दी पर अमल करें। जब हम अल्लाह के दीन की मदद करेंगे तो अल्लाह भी हमारी मदद करेगा।

मौलाना मुहम्मद सालिम कासिमी साहब ने मुस्लिम एकता पर जोर देते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता एक अच्छी चीज है और उसका स्वागत किया जाना चाहिए लेकिन इस वास्तविकता को नही भूलना चाहिए कि देश से ज्यादा अहम दीन है। इसलिए बुद्धिमानी यही होगी कि दीनी बुनियाद पर मुसलमानों के बीच एकता के रिश्ते कायम किये जाएं।

इस अवसर पर जो घोषणा–पत्र जारी किया गया उसमें कहा गया कि इस्लामी शरीअत खुदा की भेजी हुई आखिरी शरीअत है जिससे कियामत तक इन्सायित की हिदायत व फलाह जुड़ी हुई है। मुसलमान इस दीने खुदावन्दी के अमीन हैं और पूरी इन्सानियत तक खुदा के इस सन्देश को पहुंचाना उम्मत का कर्तव्य है। इसके लिए यह जरूरी है कि हम स्वयं इस्लामी शिक्षाओं से अवगत हों और उसके अनुसार अमल करे यदि हम शरीअत पर न चलें और इस बात की आशा करें कि सरकार हमारी शरीअत की हिफाजत करे तो यह सादालौही होगी।

घोषणा–पत्र में यह भी कहा गया है कि आज मुस्लिम समाज में बहुत–सी बुराइयां घुस आयी है। विशेष रूप से विवाह में अनुचित मांग, फुजूलखर्ची, सगे–संबंधियों के अधिकारों की अनदेखी, विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं का निकाह न हो पाना और उनसे संबंधित अधिकारों का अदा न किया जाना, औरतों को मीरास से वंचित रखना, एक–दूसरे से संबंध बनाते समय इस्लामी शरीअत के उसूलों को नजरअंदाज करके रस्मो–रिवाज को मेयार बनाना। ये कुछ ऐसी बीमारियां

है जो दूसरे पड़ोसियों से प्रभावित होकर मुस्लिम समाज का हिस्सा बन चुकी है।

इसलिए आलिमों और खतीबों का यह कर्तव्य है कि वे इनके सिलसिले में पूरी शक्ति के साथ आम इन्सानों को अवगत कराएं। धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शैक्षणिक संस्थाओं का कर्तव्य है कि वे अपने प्रभाव क्षेत्र में समाज को इन बुराइयों से दूर रखने में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करें। ऐसे मिसाली समाज का निर्माण करें जिसमें सभी वर्गों को उसके अधिकार दिये जाते हैं। क्योंकि हम अपने अमल से ही इस्लाम का सही और प्रभावशाली परिचय करा सकते हैं।

घोषणा–पत्र में कहा गया है कि शरीअत पर अमल करने के साथ तमाम मुसलमानों, खासकर कानून जानने वालों और बुद्धिजीवियों को यह समझाने की आवश्यकता है कि इस्लामी शरीअत पूरी तरह मानवीय स्वभाव, मानवीय आवश्यकताओं और अकल के तकाजों से हम आंहग है। इसमें एक ऐसे समाज का निर्माण किया गया है जिसमें हर समुदाय के साथ अदलो–इन्साफ और हुकूक के बीच संतुलन से काम लिया गया है। क्योंकि शरीअत खुदा की भेजी हुई है और अल्लाह से बढ़कर इन्सान की जरूरतों और मस्लिहतों से कोई और जात आगाह नही हो सकती।

परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए दो बातें बुनियादी अहमियत रखती है।

(अ) दीन पर जम जाना

(ब) उम्मत में इत्तिहाद

यदि मुसलमान अपनी पंक्तियों में वहदत को बाकी रखें और बिखराव न पेदा होने दें तो उनमें बेपनाह ताकत आ जाएगी क्योंकि वास्तविक अर्थों में वे एक ऐसी उम्मत हैं जो पूरी दुनिया में सर्वाधिक संख्या में हैं। जो अपनी सोच और आस्था की दृष्टि से मानव एकता की दावत देती है।

खुद हमारे देश में इस उम्मत की तादाद दूसरे नम्बर पर है। देश के कोने–कोने में न केवल उसके दर्जनों बल्कि उसकी सेवाओं के अनेकों चिन्ह मौजूद है।

पर्सनल लॉ बोर्ड ने केन्द्र सरकार को भी चेतावनी दी है कि वह मजलूमों की सहायक बनने के बदले जालिमों के साथ दोस्ती निभा रही है। वह अमेरिका की हर आवाज़ पर लब्बैक कहती है और उसके अनुचित और अवास्तविक रवैये कि भी आंख बन्द करके समर्थन करती है। हालांकि अफ़गानिस्तान, इराक और ईरान के मामले में उसका अन्यायपूर्ण एवं जालिमाना अमल एक खुली किताब है।

इसराईल से हमारे देश के बढ़ते संबंध, फिलिस्तीनियों की मजलूमियत और उनके विरूद्ध होने वाली आतंकवादी कार्रवाइयां को बल देने की वजह बन रहे हैं। सरकार को अपने रवैये से बाज़ आ जाना चाहिए।

घोषणा–पत्र में मुस्लिम पूंजीपतियों एवं व्यापारियों से अपील की गयी है कि वे इस देश में आधुनिक प्रचार–प्रसार माध्यमों में भागीदार बनने की कोशिश करें। विशेष कर अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में प्रिंट मीडिया का अत्यधिक महत्व है। इसलिए इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

उम्मते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०)

अहले सुन्नत का विश्वास है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत तमाम दूसरी उम्मतों से अफ़ज़ल है और सब से अफ़ज़ल उम्मती वह है जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा आप पर ईमान लाए, आप की तस्दीक़ की आप से बैअ़त की और फ़रमां बरदारी का तौक़ गले में डाला, आप के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े (अर्थात ग़ज़वात में शरीक हुए) आप की इ़ज़्ज़त की, आप की मदद की, अपनी जान, अपना माल आप की इताअ़त में राहे हक़ में ख़र्च किया। यअ़नी सारे सहाब–ए–किराम (रज़ि०) फिर उन में अफ़ज़ल वह है जिन्होंने सुल्हे हुदैबीया में शिरकत की और पेड़ के नीचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पवित्र हाथ पर बैअ़त की जिसे बैअ़त रिज़वान कहते है, यह चौदह सौ लोग थे।

फिर उनमें वह तीन सौ तेरह अफ़ज़ल हैं जिन्होंने ग़ज़व–ए–बद्र में शिरकत की। अस्हाबे तालूत की भी यही गिन्ती थी। फिर वह चालीस सहाबा अफ़ज़ल हैं, जो हज़रत उमर के साथ ईमान लाये थे, उनमें वह दस बेहतर हैं जिनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी दी, उनके नाम यह हैं, अबू बक्र, उमर, उ़स्मान, अ़ली, तलहा, ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रहमान, सअ़द, सईद और अबू उ़बैदह बिन जर्राह (रज़ि०) उनमें सबसे अफ़ज़ल चारों ख़ुलफ़ा बित्तरतीब अबू बक्र, उमर, उसमान और अ़ली रज़ियल्लाह अ़न्हुम हैं।

डेनमार्क में मुसलमानों की बढ़ती संख्या

अकीदतुल्लाह कासिमी

डेनमार्क अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के खिलाफ़ घृणा फैलाने वाले कार्टूनों के वहां के समाचार पत्रों में प्रकाशन के कारण कई वर्षों से दुनिया भर के मीडिया की सुर्खियों में है। सच्ची बात यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मानहानि करने वाले इन कार्टूनों का प्रकाशन, इस देश में मुसलमानों की बढ़ती संख्या को देखकर वहां के लोगों में बढ़ते डर व खौफ का नतीजा है। अमेरिका की ओर से इस्लाम और मुसलमानों के विरूद्ध किया जाने वाला आंतकवाद का प्रचार डेनमार्क के बाशिन्दों को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है।

भारतीय नागरिकों की तरह डेनमार्क के लोगों के दिल व दिमाग पर भी यह प्रचार बहुत बुरा प्रभाव डाल रहा है और वे आतंक की मानसिकता में जीवन जी रहे है। दूसरी ओर अगर मुसलमान आलिम और विद्वान कह रहे हैं कि डेनमार्क के पुराने नागरिकों और मुसलमानों के बीच जो फासले बढ़ रहे हैं हम उन्हें दूर करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन कार्टूनों के प्रकाशन के खिलाफ़ होने वाले मुसलमान के प्रदर्शन और हिंसक घटनाएं डेनमार्क के नागरिकों के अन्दर खौफ़ की मानसिकता बढ़ा रही है।

जबकि कार्टूनों के प्रकाशन ने मुसलमानों पर दूसरा ही असर डाला है कि जो लोग पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगकर इस्लाम की शिक्षाओं, हुक्मों, सभ्यता और विचारधारा से दूर हो रहे थे अब वे इस्लाम की और लौट रहे हैं। मस्जिदों में नमाज़ियों की संख्या बढ़ रही है, मस्जिदें छोटी पड़ रही हैं। मुसलमान कड़ाके की सर्दी के बावजूद बाहर प्लास्टिक की चटाइयां और मुसल्ले बिछाकर नमाज अदा कर रहे हैं। मस्जिदों का विस्तार कर रहे हैं। लोग नयी–नयी मस्जिदों का निर्माण कर रहे हैं।

डेनमार्क यूरोप के उत्तरी क्षेत्र में स्थित एक छोटा–सा देश है जिस का कुल क्षेत्रफल ४३०६४ वर्ग किलोमीटर और आबादी ५४,१३,००० है। यहां की ८५.३ प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है। यहां मुख्य तौर पर डेनमार्क नस्ल के लोग ही आबाद हैं कुछ जर्मन भी हैं। धार्मिक तौर पर इवेजंलीकल लूथरन ईसाई बहुमत में हैं कुछ प्रोटेस्टेट भी हैं। एक अंदाजे के अनुसार २ से ५ प्रतिशत तक मुसलमान है। डेनमार्क के दक्षिण में जर्मनी, दक्षिणी में नार्वे, उत्तर–पूर्व में स्वीडन है यह उत्तर और वेलीटिक सागरों को एक–दूसरे से अलग करता है। लगभग ५०० टापुओं पर आधारित है जिनमें से १०० के लगभग आबाद है। यहां की राजधानी कोपन हेगन है जिसकी आबादी १० लाख ६६ हजार है।

डेनमार्क का पता लगाने का सेहरा बिशप एबसेलन (११२५–१२०१) के सिर बांधा जाता है। मध्यकाल में इस पर बहुत से आक्रमण हुए। १७वीं शताब्दी तक डेनमार्क की राजधानी एक बडी शक्ति के रूप में पहचानी जाती थी। उसके बाद उसका दक्षिणी भाग स्वीडन के कब्जें में चला गया, १८१५ में नार्वे अलग हो गया।

डेनमार्क में मज़हबी आजादी को कानूनी हैसियत हासिल है। इस आजादी से यहां मुसलमानों को खास फायदे हुए थे, टेक्स की अदायगी में भी कुछ सुविधाएं दी गयी थीं। सरकारी तौर पर मुसलमानों की कई तंजीमों को मान्यता दी गयी थी लेकिन ज्यादातर पश्चिमी देशों के विपरीत डेनमार्क में चर्च और सरकार में ज्यादा अन्तर नही है। इसलिए चर्च ऑफ डेनमार्क ईसाइयों की धार्मिक अथॉर्टी ने अर्थव्यवस्था पर कब्जा कर रखा है जिसकी वहज से मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों को नुकसान हो रहा है। डेनमार्क में रहने वाले मुसलमान ज्यादातर मुस्लिम बहुल देशों से आयें हुए हैं। यहां मुसलमान तीन मरहलों में आये। पहले मजदूर मुसलमान आये, फिर पनाह लेने वालों की शक्ल में और तीसरे मरहले में वे जिन्होने यहां की औरतों से शादियां की और यही के होकर रह गये।

१९७० की दहाई के शुरू में मुसलमान तुर्की, पाकिस्तान मराकश और यूगोस्लाविया से रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में आये। १९७३ के बाद डेनमार्क सरकार ने इस तरह आने वालों पर पाबन्दी लगा दी। १९८० और १९९० दहाइयों में ईरान, इराक, गज्जा पट्टी और जार्डन के पश्चिमी किनारे से मुसलमान बड़ी संख्या में यहां पनाह लेने के लिए आये। १९९० में सोमालिया और बोस्निया से भी पनाह लेने के लिए आये। इस तरह यहां आकर आबाद

हो जाने वालों से मेल–मिलाप और रिश्तेदारियों के सहारे यहां आने का भी सिलसिला रहा। २००२ में डेनमार्क की संसद ने एक कानून बनाकर इस प्रकार आने वालों के रास्तों में मुश्किलें खड़ी कर दीं। जिसमें कहा गया है कि ऐसी शादियों को मान्यता नही दी जाएगी जो २४ वर्ष से कम उम्र में हुई हो।

डेनमार्क में किसी मस्जिद या किसी और धार्मिक इबादतगाह के बनाने पर कोई पाबन्दी नहीं है। यहां की राजधानी कोपेनहेगन में १९६७ में नुसरत जहां इबादतगाह बनायी गयी थी। लेकिन ऐसी इमारतें बनाने के सिलसिले में इलाकों के चुनाव के कानून बहुत सख्त हैं।

कोपेनहेगन के करीब अमागर नामी जगह पर कुछ जमीन जामा मस्जिद बनाने के लिए खास की गयी है लेकिन अभी वह बन नही पायी है। यहां मुसलमानों के लिए ७ अलग–अलग कब्रिस्तान भी हैं।

यहां मुसलमानों का पहला प्राइवेट स्कूल दि इस्लामिक अरबिक स्कूल के नाम से १९७८ में बना था उसके बाद मुसलिम स्कूलों की संख्या बढ़ती गयी। अब तक २० स्कूल बड़े–बड़े शहरों में बन चुके है। जहां हर प्रकार की सुविधाएं लंबी–चौड़ी जगह और होस्टलों के अलावा छात्र–छात्राओं को उनके पैत्रिक देशों का वातावरण भी उपलब्ध कराया जाता है। १९८० में पाकिस्तानी, तुर्की और अरबी छात्रों के लिए अलग–अलग स्कूल कायम किये गये। फिर १९९० की दहाई में सोमाली फिलिस्तीनी और इराकी मुसलमानों ने अपने–अपने अलग स्कूल बनाए। अब पश्चिमी यूरोप के ज्यादा तर देशों की तरह डेनमार्क में भी मुसलमानों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। डेनमार्क प्यूपिल्ज़ पार्टी दूसरे देशों से आने वालों का विरोध कर रही है वह मौजूदा मिली–जुली सरकार में शामिल है इसलिए दूसरे देशों से आने वालों के विरूद्ध सरकारी पॉलिसी सख्त हो रही है। इन हालात का मुकाबला करने के लिए मुसलमानों ने भी अपने कई दल बना लिए हैं।

सितम्बर २००५ में डेनमार्क के अख्बारों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की शान में गुस्ताखी वाले कार्टून प्रकाशित किये तो मुसलमानों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन किये। दो मुस्लिम देशों ने डेनमार्क के राजदूतों को वापस भेज दिया। कई मुस्लिम देशों ने डेनमार्क की तैयार की हुई चीजों के आयात पर पाबन्दी लगा दी। खुद डेनमार्क के मुसलमानों ने भी इन कार्टूनों के विरूद्ध प्रदर्शन किये। वहां के मुसलमान वहां की सरकार और मीडिया की बहुत ज्यादा शिकायतें करते पाये जा रहे हैं। वे अपनी दीनी शिनाख्त की हिफाजत करना चाहते हैं। इन हालात में वे अपने दीन से जोरों के साथ जुड़ रहे हैं।

सेहत के लिए बहुत फायदेमन्द है तुलसी

पुराने जमाने में तमाम मरज का इलाज जड़ी बूटियों के जरिये हकीम या वैद्य किया करते थे। आज बदलते वक्त में भले ही डाक्टरों की भीड़ है मगर आज भी लोग हकीमी इलाज को पसन्द करते हैं। कुदरत ने दुनिया के तमाम पेड़ पौधों को इन्सानी सेहत को शिफा बख्शने वाले उन्सुर दिए हैं। तुलसी भी उनमें से एक है कई खूबियों वाला तुलसी का पेड़ आज ज्यादातर लोगों के घरों में नजर आता है। हकीमों ने भी तुलसी के पेड़ को सेहत के लिए बड़ा कारामद बताया है। आज साइंसदान इसकी खूबियों को जनाने के लिए रिसर्च कर रहे हैं। तुलसी के पौधे का इस्तेमाल जड़ से लेकर पत्तियों तक होता है जिसमें कई बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।

तुलसी का इस्तेमाल करके हम कई बीमारियों पर काबू पा सकते हैं।

सांस की सभी बीमारियों में तुलसी का इस्तेमाल फायदेमन्द है।

सर्दी–नजला, खांसी जैसी बीमारियों के लिए तुलसी सबसे बेहतर है।

गले की बीमारियों को दूर भगाने में तुलसी कारगर साबित होती है।

सिरदर्द की शिकायत को दूर करने में तुलसी बेहद फायदेमन्द है।

जिस्मानी दर्द को दूर करने के लिए तुलसी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

नसों की जकड़न को भी तुलसी के इस्तेमाल से दूर किया जा सकता है।

तुलसी जिस्म की गड़बड़ियों को दूर करके कब्ज की शिकायत दूर करती है।

तुलसी के इस्तेमाल से भूक भी खुल जाती है।

हाई ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारियों को दूर करने में तुलसी का कोई सानी नहीं है।

यह जिस्म में ब्लड प्रेशर को कन्ट्रोल करती है।

तुलसी के इस्तेमाल से खून में कोलेस्ट्राल की सतह काबू में रहती है।

उपभोक्ताओं की समस्याएं और उनका समाधान

योगेश कुमार गोयल

बाज़ार से मिर्च का पैकेट ख़रीदा, पैकेट खोला तो मिर्च में फफूंद लगी थी। कोई बिजली का उपकरण ख़रीदा लेकिन उपकरण ख़राब होने पर वारंटी पीरियड में होने के बावजूद दुकानदार उसे ठीक कराने या बदलने में आनाकानी कर रहा है। टेलीफ़ोन का बिल समय से जमा करा दिया किन्तु विभाग ने फिर भी टेलीफ़ोन काट दिया। टेलीफ़ोन कई महीनों से ख़राब पड़ा है और विभाग फ़ोन ठीक कराने के बजाय बिल लगातार भेज रहा है और बिलों के भुगतान के बाध्य करता है। ट्रेन में रिज़र्वेशन कराया लेकिन फिर भी बर्थ नहीं मिली। इस प्रकार की समस्याओं से हर व्यक्ति को रू–ब–रू होना ही पड़ता है। अधिकांश लोग ऐसे मामिलों में मन ही मन कुढ़ते रहते हैं और दूसरों के सामने बड़बड़ाकर अपने दिल की भड़ास निकाल लेते हैं पर अब ज़माना बदल गया है। अब आप अपना शोषण होने पर अपने अधिकार की लड़ाई लड़ सकते हैं।

दरअसल बाज़ार में उपभोक्ताओं का शोषण होना कोई नयी बात नहीं है। उपभोक्ताओं को इस शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए कई कानून भी बनाए गये हैं, लेकिन २४ दिसम्बर १९८६ को 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' के अस्तित्व में आने के बाद से न केवल उपभोक्ताओं को शीघ्र, त्वरित व कम ख़र्च पर न्याय दिलाने की राह प्रशस्त हुई है बल्कि उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियां व प्रतिष्ठान भी अपनी सेवाओं अथवा उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने के प्रति सचेत हुए हैं। उपभोक्ता अदालतों की सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि इनमें लंबी चौड़ी अदालती कार्रवाई में पड़े बिना ही आसानी से शिकायत दर्ज करायी जा सकती है। उपभोक्ता अदालतों से न्याय पाने के लिए किसी प्रकार के अदालती शुल्क की आवश्यकता नहीं होती है और मामलों का निबटारा भी शीघ्र होता है।

कैसे बनें जागरूक उपभोक्ता?

ख़रीदी गयी वस्तू अथवा सेवा की रसीद या बिल ज़रूर लें।

ख़रीदने से पूर्व वस्तु की 'एक्सपायरी डेट' (यदि कोई हो) अवश्य देख लें।

लुभावने विज्ञापनों से भ्रमित होकर ख़रीदारी न करें। किसी भी वस्तु की ख़रीदारी से पूर्व उसके बारे में समस्त जानकारी प्राप्त कर लें।

जहां तक संभव हो, आई०एस० आई० या आई०एस०ओ० चिन्ह वाली वस्तुएं ही ख़रीदें।

यदि सभी सावधानियों के बाद भी आपके साथ कोई धोखा हुआ है या आपके अधिकारों का हनन हुआ है तो उपभोक्ता फोरम में शिकायत करने से न हिचकिचाएं।

उपभोक्ता कौन है और उपभोक्ता आधिकार क्या है?

हर वो व्यक्ति उपभोक्ता है, जिसने किसी वस्तु या सेवा के क्रय के बदले धन का भुगतान किया है या भुगतान करने का आश्वासन दिया है और ऐसे में किसी भी प्रकार के शोषण या उत्पीड़न के ख़िलाफ़ उपभोक्ता आवाज़ उठा सकता है तथा क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। ख़रीदी गयी किसी वस्तु, उत्पाद अथवा सेवा में कमी या उसके कारण होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के बदले उपभोक्ताओं को मिला क़ानूनी संरक्षण ही उपभोक्ता अधिकार है। यदि ख़रीदी गयी किसी वस्तु या सेवा में कोई कमी है या उससे आपको कोई नुक़ासन हुआ है तो आप उपभोक्ता फोरम में अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

शिकायत कहां करें?

शिकायत उसी उपभोक्ता अदालत में करें, जहां उसका अधिकार क्षेत्र बनता हो। सामान्यतः वस्तु अथवा सेवा की क़ीमत व हर्जाने सहित ५ लाख रुपये तक के मामलों की शिकायत ज़िला उपभोक्ता फोरम में,५ लाख से २० लाख रुपये तक के मामलों की शिकायत राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग में तथा २० लाख से ऊपर के मामलों की शिकायत राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण आयोग में की जा सकती है। यदि कोई भी पक्ष ज़िला उपभोक्ता फोरम के निर्णय से संतुष्ट नहीं है तो वो राज्य आयोग में अपील कर सकता है। राज्य आयोग के फ़ैसले से संतुष्ट न होने की स्थिति में राष्ट्रीय आयोग में और राष्ट्रीय आयोग के फ़ैसले के ख़िलाफ़ सर्वोच्च न्यायालय में अपील

की जा सकती है। अपील फ़ैसले के ३० दिनों के अन्दर की जा सकती है।

शिकायत कैसे करें?

उपभोक्ता फ़ोरम, आयोग या उसके अध्यक्ष को संबोधित करते हुए कोई भी शिकायत सादे काग़ज़ पर लिखकर की जा सकती है। शिकायत दर्ज कराते समय आपको यह बताना है कि आपने कब, क्या और कहां से कोई वस्तु अथवा सेवा ली और उक्त वस्तु या सेवा के बदले आपने क्या भुगतान किया तथा विकेता या सेवादाता ने वस्तु या सेवा के प्रति आपको क्या विश्वास दिलाया और किस वजह से वो आपके विश्वास पर खरी नहीं उतरी, उससे आपको क्या क्षति हुई, क्या ख़रीदी गयी वस्तु गारंटी अथवा वारंटी पीरियड मं हे। शिकायत के साथ ख़रीदी गयी वस्तु या सेवा के बिल अथवा रसीद की प्रति, गारंटी/वारंटी कार्ड की प्रति अवश्य संलग्न करें। अपनी शिकायत में अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखने के साथ–साथ उस व्यक्ति अथवा फर्म का नाम व पता भी साफ़–साफ़ लिखें, जिसके ख़िलाफ़ आप शिकयत दर्ज करा रहे हैं।

शिकायत दर्ज कराने पर कोई शुल्क नहीं लिया जाता और आप अपनी शिकायत व्यक्तिगत रूप से अथवा डाक द्वारा भी उपभोक्ता फोरम को भेज सकते हैं। यही नहीं, एक जैसी शिकायत होने पर एक से ज्यादा उपभोक्ता सामूहिक शिकायत भी कर सकते हैं और शिकायत में एक से अधिक प्रतिवादी भी बनाए जा सकते हैं। सामान्तः मामलों का निवाराण तीन से पांच माह के भीतर हो जाता है। हर उपभोक्ता न्यायालय में प्रायः एक अध्यक्ष व दो पदेन सदस्य होते हैं और बहुमत का निर्णय ही मान्य होता है। अधिकांश ज़िला उपभोक्ता फोरम ज़िला एवं सत्र न्यायालय परिसर में ही लगते हैं और ज़िला न्यायाधीश ही अधिकांश ज़िला फोरम के पदेन अध्यक्ष होते हैं। उपभोक्ता अदालत के निर्देश की अवहेलना करने पर ऐसे व्यक्ति को तीन वर्ष की क़ैद या १० हज़ार रुपये जुर्माना या दोनो सज़ाएं हो सकती हैं।

शिकायत दर्ज कराते समय किन बातों का विशेष ध्यान रखें?

१. आप जिस उपभोक्ता फोरम या आयोग में शिकायत कर रहे हैं, वह शिकायत उसी के न्याय क्षेत्र से संबंधित हो।

२. शिकायत करते समय अपनी ओर से आयोग को कोई निर्देश देने की चेष्टा न करें।

३. शिकायत में लगाए गये आरोपों के समर्थन में सभी आवश्यक दस्तावेज़ों की प्रतियां संलग्न करें लेकिन क्षतिपूर्ति के लिए अनुचित मांग न करें।

४. अगर आपको लगता है कि आप स्वयं अपनी शिकायत की सही ढंग से पैरवी नहीं कर पाऐगे तो कोई वकील भी कर सकते हैं।

५. विरोधी पक्ष को नाहक़ परेशान करने के लिए ही शिकायत न करें, क्योंकि अगर यह साबित हो गया कि आपने जान–बूझकर दूसरे पक्ष को परेशान करने के लिए शिकायत की है तो उपभोक्ता फोरम इसके लिए आपको भी दंडित कर सकता है।

पूरे विश्व में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है

अमेरिका में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अठत्तर लाख ज्यादा है। केवल न्यूयार्क में ही उनकी संख्या पुरुषों से दस लाख बढ़ी हुई है और जहां पुरुषों की एक तिहाई संख्या सोडीमीज (पुरुष मैथुन) है और पूरे अमेरिका राज्य में उनकी कुल संख्या दो करोड़ पचास लाख है। इससे प्रकट होता है कि ये लोग औरतों से विवाह के इच्छुक नहीं हैं। ग्रेट ब्रिटेन में स्त्रियों की आबादी पुरुषों से चालीस लाख ज्यादा है। जर्मनी में पचास लाख और रूस में नब्बे लाख से आगे हैं। केवल खुदा ही जानता है कि पूरे विश्व में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कितनी अधिक है।

औलाद की तर्बियत

बच्चा जो पहुंचे सात में कहये पढ़ो नमाज़
दस पूरे कर लिये तो अब छोड़े न वो नमाज़
छोड़े जो अब नमाज़ तो उसको सज़ा मिले
सोए न एक साथ अब बिस्तर जुदा रहे
ये तो नबीये पाक की सच्ची हदीस है
और मुअ़तबर किताब में लिखी हदीस है
अब्बा के साथ सोए जो बेटा तो ठीक है
अम्मा के साथ सोए जो बेटी तो ठीक है
दादा के साथ सोए जो पोता हरज नहीं
दादी के साथ सोए जो पोती हरज नहीं
लड़की बहन के साथ जो सोए रवा कहें
भाई का बिस्तर भाई से लेकिन जुदा करें

जनता की सुरक्षा के लिए राजि–गश्त

मौलाना इमामुददीन रामनगरी

हज़रत उमर (रज़ि०) प्रजा की ख़ैर–ख़बर लेने के लिए रात में मदीना और उसके आस–पास के स्थानों का गश्त किया करते थे, ताकि किसी नागरिक या नये आने वाले को किसी प्रकार की आवश्यकता या कष्ट हो, तो उसे दूर कर दें।

एक रात आप गश्त के लिए निकले। आपके दास हज़रत असलम (रज़ि०) भी साथ थे। आपने एक ऊंचे स्थान से देखा कि एक ज़गह आग जल रही है। आपने फ़रमाया–"असलम! मालूम होता है, वहां कोई क़ाफ़िला ठहरा हुआ है। हमें उसका पता लगाना चाहिए।

आप तीव्र गति से क़दम बढ़ाते हुए आग के पास पहुंचे। वहां एक स्त्री को सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। आपने पूछा–"क्या मैं निकट आ सकता हूं"

स्त्री ने जवाब दिया–" यदि तुम्हारा विचार शुद्ध है तो आ सकते हो?"

आप निकट गये और पूछा–"तुम यहां क्यों ठहरी हो ?"

स्त्री ने कहा– "रात और ठंडक के कारण ठहर गयी हूं।"

आपने पूछा–"बच्चे क्यों रो रहे हैं?"

स्त्री ने जवाब दिया–"भूख के कारण।"

आपने पूछा–"इस हांडी में क्या चढ़ा रखा है?"

स्त्री ने जवाब दिया–"कुछ नहीं केवल पानी है, ताकि बच्चे बहले रहें और सो जाएं। मेरे उमर (रज़ि०) के बीच इस संबंध में ख़ुदा ही फ़ैसला करेगा।"

आपने फ़रमाया–"ख़ुदा तुझ पर दया करे। उमर को तेरी हालत का क्या पता।"

स्त्री ने कहा–" वह प्रजा के समस्त कार्यों का उत्तरदायी है। उसको हमारी हालत का पता रखना चाहिए।"

यह सुनकर उमर (रज़ि०) चुप हो गये और असलम से कहा–" मेरे साथ चलो।" वे लपके हुए मदीना आये और सरकारी मालगोदाम से आटे का बोरा और चरबी का कुप्पा निकाला और असलम से कहा कि इसे मेरी पीठ पर लाद दो।

असलम ने कहा–"नहीं, आप मेरे कंधे पर उठा दीजिए!"

आपने फिर वही फ़रमाया और असलम ने फिर वही जवाब दिया।

तीन बार के बाद आपने फ़रमाया–" आज तुम मेरा बोझ उठा लोगे, किन्तु क़ियामत (प्रलय) के दिन मेरा बोझ कौन उठाएगा ?"

फिर आपने अपनी पीठ पर बोरा उठाया और जिस प्रकार तेज़–तेज़ चलकर आये थे, उसी प्रकार तेज़–तेज़ चलकर स्त्री के पास पहुंचे। सामान उसके आगे रख दिया और थोड़ा–सा आटा निकाल कर फ़रमाया–"तुम इसे गूंधो, मैं आग सुलगाता हूं।" यह कहकर आप आग फूंकने लगे। आपकी दाढ़ी बड़ी थी, धुएं से भर गयी।

खाना तैयार हो गया, तो आपने स्त्री से एक बर्तन मंगवाकर उसमें खाना उड़ेल दिया। जब तक बच्चे खाते रहे, आप वहीं ठहरे रहे। जब वे खाना खा चुके तो खाने का बाक़ी सामान वहीं छोड़कर उठ खड़े हुए।

स्त्री ने कहा–"ख़ुदा तुम्हें इसका अच्छा बदला दे। उमर से ज़्यादा अमीरुल मोमिनीन (प्रधान प्रशासक) होने के तुम योग्य हो।"

आपने फ़रमाया–"तुमने बिल्कुल सच कहा। यदि तू अमीरुल मोमिनीन के पास आएगी तो मुझे वहां मौजूद पाएगी।"

फिर आप वहां से किनारे हटकर बैठ गये और बच्चों का तमाशा देखने लगे। वे आपस में कुश्ती लड़ते और हंसते रहे फिर सो गये।

हज़रत उमर (रज़ि०) उठ खड़े हुए, ख़ुदा का शुक्र अदा किया और असलम से कहा – "ये बच्चे केवल भूख की तकलीफ से जाग रहे थे और रो रहे थे। इसलिए मैंने यह पसन्द नहीं किया कि बच्चे जब तक खा–पीकर संतुष्ट होकर सो न जाएं, मैं वापस होऊँ।"

एक बार हजरत उमर (रजि०) रात को गश्त के लिए निकले। नगर के बाहर एक शिविर दिखायी दिया, जिसके द्वार पर एक ग्रामीण खड़ा था। आप जाकर उसके निकट बैठ गये और उसका हाल जानने के लिए इधर–उधर की बातें करने लगे। उसी बीच शिविर के भीतर से रोने की आवाज आयी।

आपने पूछा– "यह कौन रो रहा है?"

ग्रामीण ने कहा – "मेरी पत्नी प्रसव–पीड़ा से पीड़ित है। तुम इस सम्बन्ध में मेरी क्या सहायता कर सकते हो?

यह सुनकर हजरत उमर (रजि०) वहां से उठे, घर आये और अपनी पत्नी हजरत उम्मे कुलसूम से हाल बयान किया और फरमाया कि मेरे साथ चलो।" वे आपके साथ हो लीं। ग्रामीण के शिविर पर पहुंचकर आपने कहा – अनुमति दो तो ये अन्दर जाएं और तुम्हारी पत्नी की सेवा करे। ग्रामीण ने अनुमति दी और हजरत उम्मे कुलसूम अन्दर गयीं। थोड़ी देर बाद बच्चा पैदा हुआ। हजरत उम्मे कुलसूम ने हजरत उमर (रजि०) को पुकार कर कहा – "अमीरूल मोमिनीन अपने मित्र को शुभ समाचार दे दीजिए, बालक पैदा हुआ है।"

ग्रामीण अमीरूल मोमिनीन का शब्द सुनकर चौंक उठा और सम्मान पूर्वक बैठ गया। हजरत उमर (रजि०) ने फरमाया – तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो। कल मेरे पास आना, मैं इस बच्चे का वजीफा नियत कर दूंगा।'

एक बार आप रात को गश्त कर रहे थे। एक स्त्री अपेन कोठे पर बैठी एक कविता पढ़ रही थी जिसमें अपने पति को याद कर रही थी।

पता चला कि उस स्त्री का पति युद्ध में गया हुआ है। उस के विरह में वह दुखजनक कविता पढ़ रही थी। हजरत उमर (रजि०) को बहुत दुख हुआ और दिल में कहा कि मैं स्त्रियों पर बड़ा अत्याचार कर रहा हूं। वह अपनी बेटी हजरत हफसा के पास आये, जो महाईशदूत की पत्नी भी थीं, और पूछा – "पत्नी पति के बिना कितने दिन व्यतीत कर सकती है?"

उन्होंने कहा – चार महीने!"

अतः सुबह होते ही आपने हर स्थान पर आदेश भेजा दिया कि कोई सैनिक चार महीने से अधिक बाहर न रहे।

हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ (रजि०) का बयान है कि एक बार हजरत फारूक (रजि०) रात को मेरे घर आये। मैंने कहा – "आपने क्यों कष्ट किया, मुझे बुला लिया होता।" आपने फरमाया– "अभी सूचना मिली है कि नगर से बाहर एक काफिला आकर ठहरा है। लोग थके–मांदे होंगे। आओ हम–तुम चलकर पहरा दें।" अतः दोनों महापुरुष रात भर काफिले का पहरा देते रहे।

दोहे

पेड़ों बिन 'रोहित' बने, जीवन बहुत उदास।
रोगों की भरमार हो, बनो काल का ग्रास।।
चलती आरी रोक ले, अब भी तू इन्सान।
वरना निश्चित नाश है, कहना मेरा मान।।
भला चाहते पेड़ हैं, कहता है इतिहास।
मानव का होता नहीं इनके बिना विकास।।
पेड़–पेड़ देता हमें, जीने का सामान।
फिर इनको क्यों काटता, ऐ नादां इन्सान।
तरुवर भी है जीव सम, समझ अरे इन्सान।
अपना जीवन होम कर, राखे तेरा ध्यान।।
पेड़ काटना छोड़कर, कर तू इनसे प्यार।।
तरुवर काटना छोड़ कर, कर तू इनसे प्यार।
मानव कैसे भूलता, तू इनका एहसान।।
जिनसे पाकर फूल–फल, देता इनको मौत।
पेड़ों में जीवन निहित, तेरा जीवन मौत।।
ठंडी–ठंडी छांव दें, सुन्दर–सुन्दर फूल।
फिर भी बांटे मनुज तू, यह तेरी है भूल।।
पेड़ लगाओ तुम घने जब हो वर्षा काल।
रोहित डर कर पेड़ से भागे देख अकाल।

नमाज़ में अत्तहीयात में आप कहते हैं -

तमाम ज़बान की इ़बादतें और तमाम बदन की इ़बादतें और तमाम पाक माल की इ़बादतें अल्लाह ही के वास्ते हैं। ऐ नबी आप पर सलाम और अल्लाह की रह़मत और उसकी बरकतें हों। हम पर सलाम और तमाम अल्लाह के नेक बन्दों पर सलाम, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के अ़लावा और कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और गवाही देती हूं कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उसके बन्दे और उकसे रसूल हैं।

दुरूद में आप कहते हैं

ऐ अल्लाह रह़मत भेज मुह़म्मद पर और मुह़म्मद की आल पर जिस तरह रह़मत भेजी तूने इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर बेशक तू ही ता़रीफ़ के लाइक़ और बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह बरकत दे तू मुह़म्मद और मुह़म्मद की औलाद को जैसी बरकत दी तूने इब्राहीम को और उनकी औलाद को बेशक तू ही तअ़रीफ़ का मुस्तह़िक़ और बुज़ुर्ग है।

किस्त तीन

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इफ़्तिताह्	उदघाटन	इक़्दाम	प्रगति	इलहाम	ईश्वरीय संकेत
इफ़्तिरा	मिथ्यारोप	इक़रार	अंगीकार	इमारत	समृद्धिता, शासन
इफ़्तिराक़्	पृथकता	अक़ल्लीयत	अल्पसंख्यक	इमारत	नायकत्व
अफ़ज़ाइश	वर्द्धन	इक़्लीम	देश	इमामत	अग्रगण्यता
अफ़साना	गल्प	इक़्तिसाब	उपार्जन	अमान	शरण
अफ़सोस	खेद	इक़्तिफ़ा	पर्याप्त होना	अमानत	धरोहर
अफ़सोसनाक	खेद जनक	अक़्सरीयत	बहुसंख्यक	अम्र	आदेश
अफ़्सूँ	जादू	इक़्राम	आदर	इम्कान	संभावना
इफ़्शा	विदित करना	इक़्राह	बलात	अम्न	शान्ति
अफ़ज़ल	सर्वश्रेष्ठ	अगरचि	यद्यपि	उम्मीद	आशा
उफ़ुक़्	क्षितिज	इल्तिजा	अनुरोध	उम्मीदवार	अभ्यार्थी
इफ़्लास	निर्धनता	इल्तिफ़ात	आकृष्टि	अमीर	अधिकारी
अफ़वाह	मिथ्या समाचार	इल्तिमास	निवेदन	अमीर	नायक
इक़ामत	निवास	इल्तिवा	स्थगन	अमीन	शिश्वसनीय
इक़ामतगाह	निवास स्थान	इलहाह्	विनय	अंबार	ढेर
इक़्बाल	प्रताप	इलहाद	धर्मविमुखता	अंबोह	समूह
इक़्बालमन्द	प्रतापवान	इलहाक़्	विलीनीकरण	इन्तिबाह	चेतावनी
इक़्तिदा	अनुसरण	इल्जाम	आरोप	इन्तिख़ाब	चुनाव
इक़्तिदार	सत्ता	अलम	दुख, शोक	इन्तिसाब	सम्बन्ध
इक़्तिसादी	आर्थिक	अलमनाक	शोकपूर्ण	इन्तिशार	अव्यवस्था

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

शब्द के बीच में जिस पूरे अक्षर के पश्चात गतिशील अक्षर है वह हलन्त है।

क्या आप जानते हैं .....

अपने चमत्कारी जिस्म (शरीर) के बारे में

मारिया अली

अल्लाह तआला ने हमारे जिस्म को बहुत चमत्कारी बनाया है। उसने इसे ऐसी चीजों से बनाया है जिसकी हम कल्पना भी नही कर सकते। आईये हम जाने अल्लाह की उन नेअमतों को:–

खून :–

एक मर्द के जिस्म (शरीर) में ५ लीटर खून होता है और एक औरत के जिस्म में ४.३ ली० खून होता है। खून हमारे जिस्म में १००,००० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ता है। खून २५,०००,०००,००० से ३०,०००,०००,००० लाल जीन कोश प्राप्त करता है। लाल जीन कोश (रेड ब्लड सेल) १२० दिन तक जीवित रहते हैं और हर सेकेंड १,२००,००० से २०००,०००० तक बनते है और हर सेकेण्ड २–३ मिलियन तक खत्म होते हैं।

शक्तिशाली दिमाग (मस्तिष्क)

हमारे दिमाग से हर दिन १००,००० तक के दिमागी जीन कोश (दिमागी सेल) खत्म होते हैं। सौभाग्य से हमारे दिमाग में कुल मिलाकर १०० मिलियन (खरब) तक दिमागी सेल होते हैं।

श्वास (सांस लेना)

एक आदमी ६ ली० हवा (४२ मिनट) में अन्दर लेता है। हम एक मिनट में १३–१४ बार तक सांस अन्दर लेते हैं जब हम बैठे होते हैं। परन्तु जब हम व्यायाम करते हैं तो एक मिनट में हम ८० बार सांस लेते हैं। यदि आप एक मिनट में २० बार सांस लेते हैं तो दिन भर में २८८०० बार सांस लेते हैं।

जीन कोश (सेल)

हमारे पूरे जिस्म में ५० टिरीलियन तक जीवन कोश (सेल) है और ३ बिलियन तक सेल हर मिनट तक खत्म होते हैं। हमारे जिस्म में हर दिन १० बिलियन तक सफेद जीन कोश (सफेद सेल) बनते हैं जो बीमारियों कीटाणु (जरासीम) से लड़ने में मदद करते है।

कैमिकल (रसायन)

क्या आपको मालूम है कि हमारे शरीर में इतना कार्बन होता है कि ६०० पेन्सिल भरी जा सकती है और इतनी वसा (चरबी) की मात्रा होती है कि ७५ कैंडिल अपना फॉसफोरस या २२० माचिस और इतना आयरन की ७.५ सेटीमीटर तक कीलें बनाई जा सकती है।

पाचन क्रिया (डाईजेस्टिव सिस्टम)

हमारे पेट में एक दिन में करीब दो लीटर तक हाईड्रोक्लोरिक एसिड बनती है वह इतनी ताकतवर होती है कि एक लोहे को भी पिघला सकती है लेकिन वह हमारे पेट को कोई नुक्सान नही पहुंचा सकती क्योंकि हमारा पेट ५,००,००० जीन कोश हर मिनट नष्ट होने वाली जीन का स्थान लेती रहती है। हमारी छोटी आंत ५ मीटर लंबी होती है जो हमारे पाचन अंगों का सबसे बड़ा हिस्सा है। हमारी बड़ी आंत मोटी होती है लेकिन १.५ मीटर ही लम्बी होती है।

आँखे

हम एक दिन में २०,००० बार पलक झपकाते हैं।

बाल

हमारे बाल ०.५ मिलीमीटर तक रोज़ बढ़ते हैं।

धड़कन

हमारा दिल एक दिन में १३,६४० लीटर तक खून पूरे जिस्म में दौड़ता है जो काफी होता है ४०,००० पानी पीने की बोतल भरने के लिए। एक सामान्य दिल (हृदय) एक मिनट में ७० बार धड़कता है।

मुँह

हमारा मुँह हमारी जिंदगी भर में ३७,८०० लीटर तक लार (सलाईवा) बनाता है।

नाखून

हमारी उंगली के नाखून एक हफ्ते में ०.०५ सेंटीमीटर तक बढ़ते हैं जबकि पैर के नाखून चार गुना तेज बढ़ते हैं।

स्नायु या आसाब

हमारे जिस्म में १३,०००,०००,०००,००० नसे है जो कि २६० किलोमीटर की तेजी से संदेश भेजती और लाती है जैसे दुनिया की सबसे तेज गाड़ियां।

नाक

हम जब छीकते हैं तो हमारे नाक से निकलने वाले बैकटीरिया १६० किलोमीटर प्रति घंटे की तेजी से हवा में जाते हैं उतनी ही तेजी से जितनी एक रेलगाड़ी। (अगले पृष्ठ पर)

इस्लाम में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं

आज इस्लाम के ख़िलाफ़ एक तूफ़ान बरपा है। हर पहलू से इस्लाम और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर आरोपों का सिलसिला चल पड़ा है और आप (सल्ल०) की शिक्षाओं को निशाना बनाया जा रहा है। इस्लाम के बारे में कहा जा रहा है कि वह हिंसा की शिक्षा देता है। आतंकवाद के लिए उभारता है। अपने विरोधियों को सहन नहीं करता। ज़बरदस्ती अपनी बात दूसरों से मनवाना चाहता है और ताक़त के ज़ोर पर अपनी सत्ता स्थापित कराना चाहता है। आपसी बातचीत, विचार–विमर्श और समझने–समझाने का रास्ता उसने नहीं अपनाया है। वे ये भी कहते हैं कि जब तक इस्लाम है, दुनिया में अम्न क़ायम नहीं हो सकता।

उपरोक्त समाचार जमाअ़त इस्लामी हिन्द के अमीर मौलाना जलालुद्दी उमरी द्वारा दिये गये हैं। जुमा का ख़ुत्बा देते हुए उन्होंने प्राचीन अ़रबी सोसाइटी के हालात पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मुहम्मद (सल्ल०) तो सारी दुनिया के लिए रहमत बनकर भेजे गये हैं और आप (सल्ल०) की पूरी ज़िन्दगी इसकी गवाही दे रही है।

मौलाना ने आगे कहा कि क़ुरआन तो वह रास्ता दिखाता है जो सबसे सही और मज़बूत है और उसी रास्ते पर चलने में सारे इन्सानों की नजात है। इस में किसी भी कमी की निशानदेही नहीं की जा सकती। यह दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाबी तक ले जाने वाला और मंज़िल तक पहुंचाने वाला रास्ता है।

अमीरे जमाअ़त ने क़ुरआन के हवाले से इन्सानी अ़ज़मत और अन्य प्राणियों पर उसकी फ़ज़ीलत और बरतरी का उल्लेख करते हुए कहा कि ख़ुदा के जरिये दी गयी इस श्रेष्ठता को कोई भी दाग़दार नहीं कर सकता जो व्यक्ति इस श्रेष्ठता को समाप्त करना चाहता है वह क़ुरआन की नज़र में अपराधी है।

अमीरे जमाअ़त ने इस आरोप का ज़ोरदार शब्दों में खंडन किया कि इस्लाम ताक़त के ज़ोर पर अपना अ़क़ीदा दूसरों पर थोपना चाहता है और अपनी सत्ता स्थापित करना चाहता है।

उन्होंने कहा कि अगर कभी किसी व्यक्ति या सरकार ने ऐसा किया भी तो ग़लत किया और इस्लाम में अ़क़ीदा के मामले में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं है। जबरदस्ती कलमा पढ़वा देने का कोई एतिबार नहीं है। ऐसे लोग इस्लामी सोसायटी के लिए क़तई मुफ़ीद नहीं हैं जो ज़ुबान से इस्लाम का इक़रार करें और उनके दिल मुसलमान न हों।

जो लोग चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए हैं, अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत (लोक–परलोक) में दुखद यातना है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।'' (क़ुरआन , २४:१९)

ऐ आदम की संतान! हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छिपाये और रक्षा और शोभा का साधन हो और धर्मपरायणता का वस्त्र वह तो सबसे उत्तम है, वह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे ध्यान दें। ऐ आदम की संतान कहीं शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस प्रकार उसने तुम्हारे दादा–दादी को जन्नत से निकलवा दिया था, उनके वस्त्र उन पर से उतरवा दिये थे ताकि उनकी शर्मगाहें एक दूसरे के सामने खोल दे। निस्सन्देह वह और उसका गिरोह उस स्थान से तुम्हें देखता है, जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने तो शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।''

(पृष्ठ ३३ का शेष)

खाल या त्वचा

हमारी त्वचा का वजन ४ किलो से भी ज्यादा होता है जो कि १.३–१.७ वर्ग मीटर तक क्षेत्रफल घेरती है। कपड़े पहने या न पहने या किसी भी जिस्म के हिस्से से रगड़ने और सांस लेने पर भी हमारे अन्दर आग पैदा होती है जो कि सिर्फ माइक्रोस्कोप से ही देखी जा सकती है। ८० प्रतिशत से भी ज्यादा जो घर में धूल जमा होती है वो सिर्फ आदमी की बेजान त्वचा जीन कोश से जमा होती है।

सोना

हम ७.५ घंटे सोते हैं जिसमें हमारी अल्प निद्रा ६० प्रतिशत होती है और गहरी नींद सिर्फ १८ प्रतिशत और सपना (ख्वाब) हम २० प्रतिशत देखते हैं।

पसीना :–

हमारे जिस्म से ३०,००,००० पसीने के गदूद से हर रोज़ करीब ०.५ली० तक पानी निकलता है और गरमी के मौसम में हम एक दिन में १३.५ लीटर तक पानी खारिज करते हैं।

पाश्चात्य समाज

सलमान नसीम नदवी

पाश्चत्य परिवार में बूढ़ों की देख भाल एक जटिल समस्या बन गई है। एक अमेरीकी अधिकारी नारी का बयान है।

एक रात मेरी माता पर हार्ट अटेक (दिल का दौरा) पड़ा, शुभ संयोग कि दूसरे दिन मेरा एक निकटस्थ संबंधी आ गया, उस ने सुझाव दिया कि माता जी को कोई परिचर (तीमार दार) की सेवा उपलब्ध कराई जाए। हमें भी लगा कि मां अकेली घर पर न रह सकेगी तो विवश होकर एक स्त्री की सेवाएं प्राप्त कीं जो ४०० डालर प्रति सप्ताह पर सहमत हुई। परन्तु वह अपना कार्य चालित न रख सकी, दूसरी सेविका लाई गई जिसे माता जी ने पसन्द न किया, अब हमारे पास इस के अतिरिक्त और कोई उपाय न था कि हम उनको वृद्धाश्रम में स्थानान्तरित कर दें अतः हम ने यही किया।

पश्चिम में ६५ वर्ष या उससे अधिक आयु वालों में ४० प्रतिशत भयंकर मानसिक तथा शारीरिक रोगों में ग्रस्त होते हैं उनके संबंधी उनको वृद्धि नियंत्रक केन्दों में पहुचा कर उनकी देख भाल सेवा से स्वतंत्र हो जाते है।

जब किसी की संतान अपने वृद्ध माता पिता को किसी नियंत्रालय में पहुचाती हे तो उसको लगता है कि वह कोई पाप करती है परन्तु वह परिस्थिति से विवश होती है, पर सभी बूढ़े माता पिता जनों को यह आभास अवश्य होता है कि उनकी वही संतान जिनके पालन पोषण में अपने कैसे–कैसे सुख तथा आनन्द निछावर किये थे पर आज वह उन पर बोझ हैं। कुछ माता पिताओं ने टीवी पर यह बयान भी दिया कि : यदि जीवन का यह परिणाम होगा कि उस को किसी नियंत्रण केन्द्र में प्रवेश दिलाया जाए तो वह आत्म हत्या कर लेगे। न्यूयार्क की सीजिया विश्वविद्यालय के डाइरेक्टर प्रोफेसर रोबर्ट बटलर के कथनानुसार अमरीका में किसी व्यक्ति के लिये बड़े भय की बात उसकी वृद्धावस्था है, जिसका परिणाम वृद्धाश्रम में स्थानांत्रण है। जब कोई वृद्धाश्रम में पहुंचाया जाता है तो इस को लगाता है कि उसका सब कुछ समाप्त हो गया। वह व्यक्ति अपने घर, अपनी पूंजी यहां तक कि अपने अधि ाकार से वंचित हो जाता है।

बड़ी समस्या यह भी है कि जो लोग वृद्धाश्रम केन्द्र से लाभ उठाना चाहते है उनके समक्ष एक लम्बी प्रतीक्षा सूची होती है कभी कभी प्रार्थियों को एक वर्ष से अधिक प्रतीक्षा करना पड़ती है। मासिक व्यय लगभग दो हजार डालर होता है। कुछ केन्द्र तो भारी घूस लेकर प्रवेश स्वीकृति देते हैं। व्यय में शासनिक सहायता न होने के कारण बहुत से लोग धनहीन हो जाते हैं, फिर आपत्तियों की एक नवीन शृंखला आरम्भ हो जाती है। बड़ी समस्या यह है कि यह केन्द्र प्रवेश देने में स्वाधीन होते है। अतः अधिक बूढ़े अथवा शारीरिक तथा मानसिक रोगियों को स्वीकार करने से नकार देते हैं।

अमरीकी राइटर डेडी मोर लिखते है : वास्तविकता यह है कि इस समस्या के समाधान के लिये अमरीका के पास कोई एक उपाय भी ऐसा नही है जो शत प्रतिशत शुद्ध हो और सफलता दिलाए।

पशु विशेषकर कुत्ते पश्चिमी समाज का अटूट अंग बन गये है। सभी सुपर मारकेटों में कुत्तों के खान पान तथा खेल कूद के सामानो की वैसी ही व्यवस्था होती है, जैसी मानव की भौतिक आवश्यकताओं की व्यवस्था होती है। पशुओं विशेषकर कुत्तों बिल्लियों के लिए विशेष होटल आप को हर नगर और हर गांव में मिल जाएगे जो एयरकंडीशन अति माडर्न सजावटों से सजे होते है। इसी पर बस नही अपितु कुत्तों की चिकित्सा हेतु डिस्पेंन्सरियां स्थापित हैं। बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने कुत्तों की मानसिक चिकित्सा के लिये अपनी दुकाने खोल रखी है और कुत्तों की मानसिक चिकित्सा करते है तथा इस चिकित्सा को उन्होनें नियमित दृष्टिकोण तथा दर्शन का रूप दे रखा है जो गानव मनोविज्ञान से मिलता जुलता है। कुत्तों की चिकित्सा चेतना उत्पन्न करने हेतु टीवी पर प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं। कुत्तों को नहलाने, उन के नाखुन कटवाने, बाल कटवाने, शैम्पू से नहालने उन को संवारने के विभिन्न केन्द्र खुले हुए हैं, इस विषय पर पुस्तकें है, मासिक तथा सप्ताहिक पत्रकाएं निकाली जाती है जिन में कुत्तों से संबंधित बातें होती हैं आप की जानकारी

तथा मनोरंजन हेतु एक समाचार पत्र की कुछ बातें प्रस्तुत है।

प्रश्न : हमारे पास मेमी नाम का एक कुत्ता है जो मुझे बहुत प्रिय है, हम उसे अपनी संतान की भांति बरताव करते हैं, समस्या यह आ गई है कि मैं एक शिशु की माता बन चुकी हूं, मुझे डर है कि नव शिशु के पालन पोषण में कही मेमी का हक न मारा जाए, कृपया ऐसा परामर्श दें जिससे मेमी के दुख का समाधान हो सकें।

एडीटर का उत्तर : इस समस्या में आप का स्वभाव वही होना चाहिये जो एक घर में दूसरा बच्चा पैदा होने पर होता है न पहले को भूला जाता है न दूसरे की अनदेखी की जाती है, पहले को दूसरे की खुशी में शरीक कीजिये धीरे धीरे पहला दूसरे को स्वीकार कर लेगा।

पति पत्नी में एक दूसरे को मारना बच्चों पर अत्याचार करना उनका यौनिक शोषण करना पश्चिमी समाज का स्वभाव बन चुका है पत्नी को मारने की वार्षिक घटनाओं की संख्या ६ मिलयन तक पहुंच चुकी है तथा ३० लाख पति पत्नियों के अति के शिकार होते हैं।

हिंसा की अधिक घटनाएं शराबियों द्वारा होती है आवारा लड़कियां कुछ केन्द्रों में जीवन बिताती है उनका व्यवहार यह है कि अपने दो सप्ताह के बच्चे को रोने पर थप्पड़ जड़ देती है। कुछ दिनों पहले एक सर्वे किया गया था जो चार साल में अंजाम पा सका था उससे यह इशारा मिलता है कि आत्महत्या करने वाली स्त्रियां वह है जो पहले अत्याचार की शिकार हो चुकी थी। एक रिपोर्ट के अनुसार सेनानियों में ४० प्रतिशत जख्मी तथा २० प्रतिशत कत्ल घरेलू घटनाओं के कारण होते हैं अमेरिका में पीड़ित स्त्रियों के शरण के लिये २०० केन्द्र खुले हुए हैं।

टाइम मैगजीन के अनुसार वार्षिक ६ मिलयन स्त्रियां हिंसा की शिकार होती है बेरोजगारी भी पारिवारिक हिंसा का कारण बनती है। एक मालदार शख्स की बावी हर शनिवार की रात दरवाजा बन्द कर के बैठ जाती थी ताकि अपने शौहर के लात घूंसों से बच सके। हारी नामी एक व्यक्ति आयु कारागार का जीवन बिता रहा है इस कारण कि उस पर चौथी पत्नी के बध का आरोप है।

पश्चिमी समाज में स्त्री जिस स्थान पर खड़ी है वहां से वापसी की कोई राह नही दिख रही है।

एक बुद्धिजावी ने जनेवा और इटली के बीच हवाई सफर में एक अमरीका स्त्री से बात की जिससे यह लगा कि भोग विलास तथा यौनिक स्वतंत्रता परिवार के व्यवस्थित करने में रोक है, उसने बताया कि १८ वर्ष की आयु में जो घर से निकली तो दोबारा उस घर का मुंह नही देखा।

पश्चिमी स्त्रियों की ओर से विज्ञापन छपता है कि केवल बच्चे के लिये वह किसी मर्द से मित्रता चाहती है, गर्भ हो जाने के पश्चात मर्द की ड्यूटी समाप्त हो जाएगी।

उस स्त्री ने बताया कि पश्चिमी स्त्री को १२ वर्ष की आयु में कोई मर्द मित्र अपनाता है और १८ वर्ष की आयु में बाप घर से निकाल देता है ब्वाए फ्रेन्ड भी मुंह फेर लेता है, अब यदि वह शादी करती है तो शौहर उस को घर के काम काज तथा बच्चा जनने की मशीन समझता है और जब चाहता है उसे छोड़ कर दूसरी ढूंढ लेता है। पश्चिम का यह समाजी बिगड़ा पश्चिम के पतन का संकेत दे रहा है, यह सब होते हुए पश्चिम को पूरब की पारिवारिक व्यवस्था एक आंख नही भा रही है, वह इस चेष्टा में है कि जिस एड्स में वह ग्रस्त है पूरब को भी उस में घसीट लाए।

खेद की बात यह है कि इस समय पूर्वी समाज जिस तेजी से पश्चिम पर लहालोट हो रहा है भय है कि कहीं पश्चिमी सामाजिक व्यवस्था पूर्वी सामाजिक व्यवस्था को ले न डूबे।

ग़ज़ल

डॉ० स्वर्ण किरण

गिर गया है आदमी का किरदार,
क्या होगा,
सूख गया है भीतर का प्यार,
क्या होगा?
रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी, मिलावटखोरी
की कमी नहीं,
नदी की उलट गयी है धार
क्या होगा?
बे वजह दूसरों पर लांछन लगाना
मुश्किल नहीं,
जरूरत से ज्यादा सिर पर भार
क्या होगा?
घपला, धांधली और घोटाला में
कौन साथ देगा,
छिन्न भिन्न होता कारोबार,
क्या होगा?
राजनीति का छक्का–पंजा सबको रास
कहां आता,
कुछ के गले में कीमती हार,
क्या होगा।

कारवाने ज़िन्दगी

अबुल हसन अली हसनी नदवी

प्राक्कथन

लेखक की लेखनी से आस्था व उपासना, कुरआन की आयतों की टीका, हजरत मोहम्मद सल्ल० की जीवनी, इतिहास, समकालीन महापुरुषों की जीवनी, साहित्यिक विवेचना के विषय पर दर्जनों पुस्तकें निकल चुकी हैं, किन्तु उसको किसी किताब के शुरू करने में इतना असमंजस न हुआ जितना "आप बीती" और आत्म कथा शुरू करने में हुआ। इसी असमंजस में कई वर्ष व्यतीत हो गये और इस विषय पर कलम उठाने की हिम्मत न हुई।

इसके विभिन्न कारण थे। एक कारण तो यह कि मैं अपनी कदर व कीमत को स्वयं जानता था, राजनीति, नेतृत्व, ख्याति व लोकप्रियता, ज्ञान की दक्षता इन में से कोई चीज ऐसी न थी जो इस रचना का कारण बनती, फिर इस में अपने घटना चक्र को बयान और समकालीन साथियों का उल्लेख किये बिना (जिस से अगर कोई आप बीती खाली हो तो अर्थहीन और बेजान बन जाती है) इस राह में दो पग भी चला नहीं जा सकता। और इसमें पग पग पर लड़खड़ाने और अपने बारे में आत्मप्रशंसा और दोस्तों व साथियों के बारे में हकतल्फी या अतिरंजन के इलजाम की आशंका है। फिर किसी जागरूक और संवेदनशील व्यक्ति से इसकी आशा नहीं की जा सकती कि वह अपनी आत्मकथा लिखते समय आस पास के घटनाचक्र से आंखें बन्द कर लेगा, विशेषकर जब उस का सम्बन्ध ऐसे धर्म से हो जिस में बाह्य वातावरण से प्रभावित होने और उनको प्रभावित करने की असाधारण क्षमता है फिर ऐसी संस्था और सम्प्रदाय से भी उसका सम्बन्ध हो जिसके विशिष्ट मूल्यों और परिकल्पनाओं का वह घोर हिमायती हो। और यह भी कि काल भी उसको ऐसा मिला हो जिस में इतिहास शताब्दियों की दूरी वर्षों के हिसाब से और वर्षों की दूरी हफतों और दिनों के हिसाब से पूरी कर रहा हो। और वे घटनायें घटित हो रही हो जो दुनिया के राजनीतिक मानचित्र को न केवल उलटफेर करती हों, बल्कि जीवन चक्र और इन्सानियत का हुल्या ही बदल रही हों, और विशेषकर उस सम्प्रदाय (मिल्लत) के वर्तमान और भविष्य को प्रभावित कर रही हों जिस से लिखने वाले का भाग्य जुड़ा है। ऐसी दशा में हृदय को लेखनी से, भावनाओं को घटनाचक्र से और "जगबीती" को "आप बीती" से अलग करके कोई बड़े से बड़े तटस्थ इतिहास और पेशेवर दास्तानगो भी (जो केवल मनोरंजन का सामान करता है) कोई कहानी सुना नहीं सकता जब भी इस विषय पर कलम उठाने के लिए प्रिय मित्र फरमाइश करते या दिल में तकाजा पैदा होता तो इस रास्ते की कठिनाइयां इस विचार से बाज रहने को कहतीं कि न करने में एक बुराई है और करने में सौ बुराई।

इसी सोच विचार में जमाना गुजरता चला गया और इस अवधि में वह प्रिय जन भी चल बसे जो इसका खासतौर पर तकाजा करते थे और जिन से जीवन के कुछ घटनाक्रम के विवरण और तिथि व वर्ष मालूम करने में मदद मिल सकती थी। बाज ऐसे प्रियजन भी चल बसे जो इस को सब से ज्यादा दिलचस्पी और शौक से पढ़ते।

अचानक दिसम्बर १९८२ के शुरू में ऐसे तीन चार कार्यों से फुरसत मिली जिन में महीनों से व्यस्त था और जिनको पूरा किये बिना मेरे लिए किसी अन्य विषय की ओर ध्यान दे पाना सम्भव न था। मेरे लिये यकसर बेकार रहना जीवन का महान संघर्ष और एक तरह की सजा है। इस फुरसत में अचानक विचार आया कि मैं इस किताब का सिलसिला शुरू कर दूं। इस के दो लाभ विशेषकर सामने आये :

१. अपने जीवन के घटनाक्रम और अपने साथ खुदा का मामला देखकर, बेसाख्ता कुरआन मजीद की आयत याद आती है। अल्लाह फरमाता है :

अनुवाद : बहुत जल्द हम उन्हें अपनी निशानियां उनके चारों तरफ दिखायेंगे और खुद उनके अन्दर भी यहां तक कि उनके लिए यह इकरार किये बगैर कोई चारा न होगा कि यह कुरआन हक है, क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं तुम्हारा परदिगार हरचीज़ पर खुद गवाह है। (सूरः हा मीन सजदा ५३)

तुच्छ बौद्धिक क्षमता, सीमित वातावरण, विपरीत परिस्थितियां, अल्प

स्रोत के साथ ऐश्वरीय कृपा का जो चमत्कार और पालनहार की जो बन्दा नवाजी देखी, उससे माता–पिता की दुआओं की तासीर, नेक–नीयत स्नेह की प्रतिमूर्ति सरपरस्तों (संरक्षकों) की शिक्षा–दीक्षा, स्नेही व सुयोग्य गुरूजन की मेहनत, ईश्वर के परम भक्तों की कृपा दृष्टि, उनकी हार्दिक प्रसन्नता और हार्दिक सन्तोष का लाभ और उनपर विश्वास की बरकत जाहिर हुई। जीवन के सही उद्देश्य व व्यसन का चयन, हद दर्जे की कमजोरी, हिम्मत की पस्ती और व्यथित मन के बावजूद, चन्द उसूलों की पाबन्दी और

पैवस्तः रह शजर से उम्मीदे बहार रख

पर अमल की कोशिश का फल खुली आंखों देखा। विचार आया कि अपने जीवन की तुच्छ कहानी के अन्तर्गत यदि यह सच्चाइयां पढ़ने वालों के सामने आयें तो सीख का सामान भी होंगी और हौसिला व हिम्मत की बुलन्दी और खुदा से अच्छी उम्मीदें रखनें का कारण भी। इन सच्चाइयों को एक सीधी सादी कहानी और आप बीती घटनाक्रम में जिस प्रकार हृदय ग्राह्य किया जा सकता है, एक विद्वत्तापूर्ण थीसिस और सारगभित सम्बोधन में नहीं किया जा सकता। विशेषकर एक कम हैसियत समकालीन की आत्मकथा में जीवन के अनुभव और घटनाक्रम के जो नतीजे सामने आते हैं वह बाज अवकात इतिहास की विख्यात विभूतियों और पुराने जमाने की माननीय जीवनियों से हासिल नहीं किये जा सकते। और उनके अनुसरण की वह भावना नहीं पैदा हो सकती जो अपने समकालीन या छोटे की आत्मकथा से पैदा होती है। क्योंकि इसमें कालान्तर तथा खैर व बरकत के जमाने और विकार व बिगाड़ के युग के अन्तर की विवशता नहीं प्रकट की जा सकती।

२. दूसरा कारण यह था कि अनेक विषय घटनाचक्र, संस्थाओं व आन्दोलन, व्यक्ति और समुदाय हैं जिनको केवल अपनी आत्मकथा में समेटा जा सकता है, यदि इनका वर्णन विस्तार में किया जाये तो हर एक के लिए अलग किताब की जरूरत है। फिर इसके इतिहास लेखन की जिम्मेदारियां ऐसी हैं जो ऐसी बहुत सी सच्चाइयों और सार की बात को सामने आने नहीं देती जो "आप बीती" और आत्मकथा में सहज आ सकती हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति की जीवनी उस युग का दर्पण और उसकी बोलती तस्वीर बन जाती है। और इसमें एक इतिहासकार और लेखक को कभी कभी वह काम की बातें मिल जाती हैं जो इतिहास और जीवन वृत्तान्तों में नहीं मिलतीं।

कदाचित यह विचार लेखक के लिए दुखदायी होता कि वह एक बिदअत (नई बात) करने जा रहा है। और जो समय अभी तक ईश्वर के परमभक्तों व समाज सुधारकों के हालात लिखने और उनके कारनामों को उजागर करने में व्यतीत हुआ था, उसको वह आत्मप्रशंसा में व्यय कर के समय की बर्बादी और अपनी फजीहत का सामान कर रहा है। यूं तो विख्यात अरब साहित्यकारों और लेखकों की लेखनी से इस युग में बड़ी कामयाब, आकर्षक और प्रभावी आत्मकथायें निकलीं हैं जिनमें मिस्र के डॉ. अहमद अमीन की "हयाती" सर्वोत्कृष्ट है। इससे न केवल उनके जीवन के घटनाचक्र व अनुभव बल्कि उनके समय की सभ्यता व समाज, शिक्षा–व्यवस्था, और मिस्र के जीवन का नक्शा सामने आ जाता है, लेकिन लेखक के सन्तोष के लिए (जिस ने हिन्दुस्तान के माहौल में जिन्दगी गुजारी है) एक मात्र यह मिसाल काफी न थी। क्योंकि स्वयं हिन्दुस्तान और योरोप में इस पचास वर्षों में पचासों आत्मकथायें और अपनी कहानी अपनी जबानी लिखी गईं। अचानक यहां के धार्मिक – शैक्षिक वर्ग के व्यक्तियों और अपने आदरणीय बुजुर्गों की तीन मिसालें सामने आईं एक शेखुल इस्लाम मौलाना सैयद हुसैन अहमद मदनी की 'नक्शे हयात' जिसको मौलाना ने अपनी जीवन गाथा लिखने के लिए शुरू किया था, अफसोस है कि १३० पृष्ठ पर जाकर व्यक्तित्व विवरण को समाप्त कर दिया और हिन्दोस्तान के उस स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास लिखना शुरू कर दिया जिस में उनके गुरू शेखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन साहब का अग्रणीय हिस्सा था, और फिर उसी के विस्तार, कारण और पृष्ठभूमि के उल्लेख में किताब का दूसरा हिस्सा भी खत्म हो गया।

दूसरी मिसाल श्रद्धेय शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद जकरिया साहब की सामने आई जिन्होंने आप बीती सात खण्डों में लिखी जो उन्हीं की नहीं बल्कि उनके काल, उनके माहौल और विशेषकर धार्मिक शिक्षा व्यवस्था उनकी विशेषताओं तथा उसके कार्यकर्ताओं की जीवन शैली मिजाज व किरदार की आइनादार बन गई।

तीसरी मिसाल मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी की आई जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में "आप बीती"

लिखी, जिस में साहित्य भी है और उनके बचपन से लेकर बूढ़े पन का एक टेप रिकार्ड भी।

इन तीनों मिसालों से, जिन के प्रति श्रद्धा थी और जो किसी हद तक मेरे समकालीन भी थे, इस विचार को बल मिला कि यह कार्य कम से कम अपने हल्के और सिलसिले में अब बिदअत (नवाचार) नहीं रहा और अगर बिदअत भी है तो "बिदअते हसनः" कहलाने का हकदार है।

इस आत्मकथा के लिखने के पीछे यह विचार भी था कि अपनी समझ बौद्धिक विकास, रचना–इतिहास और अपने काल के घटनाचक्र का उल्लेख करने के सिलसिले में अपने विचार, अनुभव, आहवान और आन्दोलन को संक्षेप में प्रस्तुत करने का तथा अपनी किताबों के केन्द्र बिन्दु विचार और उनके उद्धरण प्रस्तुत करने भी अवसर मिलेगा जो अनेक किताबों में बिखरे हुए हैं जिनकी संख्या अब पचास से ऊपर हो चुकी है, और जिन पर एक समय में हर रसिक की नजर पड़नी मुश्किल है।

विषय–वस्तु में पाठकों को कहीं कहीं विस्तार दिखाई देगा किन्तु मैं समझता हूं कि जीवनी व इतिहास और आत्मकथा का यह स्वाभाविक अन्तर स्वीकार करना चाहिए कि दूसरों की जीवनी लिखने में लेखक उन माननीय व्यक्तियों का वकील होता है, और अपनी आत्मकथा में किसी हद तक आजाद और अपना ही वकील इस लिऐ आप बीती की विषय वस्तु को समानुपात व सन्तुलन के उस पैमाने से नापना सही नहीं होगा, जिस पैमाने से जीवनी की विषय वस्तु को आमतौर से नापा जाता है। आप बीती के लेखक को इसकी इजाजत देनी चाहिए कि वह अपने दृष्टिकोण और अपने जीवन को प्रभावित करने और अपने तौर पर महत्वपूर्ण समझने के अनुसार विस्तारऔर संक्षेप से काम ले, अन्यथा जीवनी और आत्मकथा में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा।

संयोग से कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी जरूरतों के आधार पर मुझे महीना दो महीना की राहत व फरागत का समय मिल गया जिस में मैं अपने ठिकाने और पुस्तक भण्डार से दूर होने के कारण कोई ऐसा काम नहीं कर सकता था जिस में किताबों को बार–बार देखने और उनसे अनेक उद्धरण लेने की जरूरत पड़ती है। मैंने यह काम दायरा शाह अलमुल्लाह में दिसम्बर १९८२ के दूसरे हफ्ते से शुरू कर दिया और इस का सिलसिला जनवरी १९८३ में कर्नाटक राज्य में भटकल और मुम्बई के शान्तमय माहौल में जारी रहा और इसकी पूर्ति मार्च १९८३ में दायरा शाह अलमुल्लाह रायबरेली में हुई जहां वह पुरानी स्मृतियां और लेख मौजूद थे जिनके बिना यह काम पूरा नहीं हो सकता था।

मैंने उस जमाने में जिस की मुहलत सीमित थी अपने को इसका पाबन्द किया कि केवल पचास वर्षों (सन् १९१५ से १९६५–६६ तक) का वर्णन लिखूं, इसके बाद अगर जिन्दगी रही और अल्लाह की मदद शामिल रही तो मैं स्वयं इसे पूरा कर दूंगा अन्यथा कोई सम्बन्धी इस कार्य को करेगा और अगर वह हिस्सा रह भी गया तो मुझे ज्यादा कलक न होगा कि महत्वपूर्ण और बुनियादी हिस्सा किताब में आ गया है।

इस्लाम में सफल दाम्पत्य

इस्लाम पति–पत्नी के बीच निबाह न होने की स्थिति में पति–पत्नी को एक दूसरे से अलग होने की अनुमति देता है, किन्तु इसका उपयोग केवल तभी किया जा सकता है, जब सभी उपाय विफल हो जाएं।

इस्लाम में पति–पत्नी के मधुर संबंध को बहुत महत्व दिया गया है। राष्ट्र और समाज की मौलिक इकाई, होने के नाते परिवार का बहुत महत्व है, इसलिए पति–पत्नी के बीच सहमति को सौभाग्य की बात बतायी गयी है। लेकिन यदि किसी गंभीर कारण से दोनों के बीच असहमति की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो जीवन को कुंठित नहीं होने देना चाहिए। पहले पति–पत्नी स्वयं अपने स्तर पर इसे दूर करने के प्रयास करें। इससे यदि बात न बने तो दोनों पक्षों के बुजुर्गों को हस्तक्षेप करना चाहिए, लेकिन यदि किसी भी तरह आपसी सहमति नहीं बन पाये तो उचित ढंग से अलग हो जाना चाहिए। तलाक को आखिरी उपाय के रूप में ही इस्तेमाल किया जा सकता है। तलाक जायज जरूर है किन्तु यह पसन्दीदा नहीं है। अल्लाह के रसूल ने फरमाया – "तलाक जायज चीजों में सबसे नापसन्दीदा अमल है।" इसलिए इसे आखिरी उपाय के तौर पर ही इस्तेमाल किया जा सकता है। कुरआन में है –

तुम जिस औरत को नापसंद करते हो मुम्किन है कि तुम्हें उस औरत की कोई चीज ना पसन्द हो और अल्लाह ने उस में बहुत सी भलाइयां रखी हो। (अन्निसा : १९)

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

इमामेहरम का फिलिस्तीनियों के लिए जरूरी वस्तुओं की सप्लाई पर जोर :–

मसजिदे हराम के इमाम ने दुन्या के मुसलमानों को खबरदार किया है कि वह गज़्ज़ा में फिलिस्तानी मुस्लिम भाइयों को कत्ल गारतगरी तथा इन्सानी तबाही का सामना है और मानव अधिकारों, स्वतंत्रा और लोकतंत्र की दुहाई देते न थकाने वाले पश्चिमी देश वासी अधीनस्त (मकबूजा) फिलिस्तीनी क्षेत्रों में इसराईली अत्याचार पर चुप हैं। जुमा के खुतबे में डा० अलसदीस ने गाजा के लोगों को खाने पीने की चीजों और दवाओं जैसे सुविधा के सामान की तुरंत सप्लाई पर जोर दिया। उन्होने सारी दुन्या के मुसलमानों को झिझोड़ा कि गाजा में महारे भाइयों को हलाकत, तबाही, भूख और नाका बन्दी का सामना है। खुदा के बाद आप मुसलमान उनकी प्रोत्साहन कर सकते है और उन्हें इस आज़माइश से बचा सकते हैं। यह सूचना अरबन्यूज ने दी है।

रोमांचक हुई अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़

अमेरिका में राष्ट्रपति पद की दौड़ रोमांचक दौर में पहुँच गई है। यूं तो इस पद पर कई नेताओं ने दावेदारी जताई पर अब यह मुकाबला चार प्रतिद्वंद्वियों के बीच कांटे की टक्कर में तब्दील हो चुका है। रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टी ने ह्वाइट हाउस पर काबिज होने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है।

डेमोक्रेटिक पार्टी के जॉन एडवर्ड्स और रिपब्लिकन पार्टी के रूडी गुइलियानी के मुकाबले से बाहर हो जाने के बाद चुनाव और रोमांचक हो गया है। एडवर्ड्स ने अपनी चुनौती खत्म होने के बाद कहा, 'अब वक्त आ गया है कि मैं इतिहास के रास्ते से हट जाऊँ ताकि डेमोक्रेटिक पार्टी की दावेदारी को बल मिले। मुझे विश्वास है कि हाइट हाउस पर हमारी पार्टी ही काबिज होगी।' उन्होनें हिलेरी क्लिंटन और बराक ओबाम के लिए मैदान खाली कर दिया है। इनके बीच पार्टी का निर्णायक उम्मीदवार बनने की जबर्दस्त होड़ है। यूँ तो एडवर्ड्स ने इनमें से किसी का समर्थन नही किया है, पर दोनों उम्मीदवार इस लोकप्रिय नेता के वोट बैंक को अपने पक्ष में करने की कोशिश में जुटे हैं।

गैर इस्लामी प्रकाशनों में 'अल्लाह' शब्द पर प्रतिबंध

मलेशिया सरकार ने गैर इस्लामी प्रकाशनों में 'अल्लाह' शब्द का प्रयोग करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। सरकार के मुताबिक ऐसा करने से देश के मुस्लिमों में भ्रम पैदा हो सकता है। सरकार के हवाले से कहा गया है कि गैर इस्लामिया प्रकाशनों में सलात (नमाज), काबा और बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) का भी प्रयोग नही किया जा सकता। सरकार का यह फैसला कैथोलिक सप्ताहिक के अपने प्रकाशन में भगवान की जगह अल्लाह शब्द प्रयोग करने पर आया है। 'स्टार' समाचार पत्र के साथ बातचीत में यहाँ के प्रधानमंत्री कार्यालय से जुड़े मंत्री अब्दुल्ला मोहम्मद जिन्हों ने कहा कि कैबिनेट ने भी अल्लाह शब्द के बेजा इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। उन्होने कहा कि चूंकि अल्लाह के मायने खुदा से हैं, इसलिए इस शब्द के बेजा इस्तेमाल पर प्रबंध लगाना जायज है।

क्या आप को ज्ञात है

तौहीद, रिसालत और क़ियामत का ज्ञान परोक्ष का उत्तम ज्ञान है, यह ज्ञान अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ही से मिल सकता है, या जिस ने उनसे पाया उससे मिल सकता है। इस उत्तम ज्ञान और उसे माने बिना कोई व्यक्ति मुसलमान नहीं रह सकता। जो मुसलमान है वह इस ज्ञान से अवगत है, जो व्यक्ति इस ज्ञान को सीख कर मान ले वही मुसलमान है। नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की हर बात (सिवाए कुछ दुन्या की बातों के) परोक्ष ही की बात होती है जो उन्हें जिब्रील (अ़०) द्वारा या सीधे अल्लाह से प्राप्त होती हैं। कभी ऐसा भी होता है कि किसी विषय के बारे में अल्लाह तआ़ला नबी को नहीं बताते तो नबी भी चुप रहते है। सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।